SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक हिंदी पत्रिका- 2024

आशीर्वाद

अंक-37

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विमलेंद्र आनंद पटवर्धन
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)

श्रीमती शांति प्रिया एस
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I)

श्रीमती दीपना गोकुलराम
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

श्रीमती मोनाली फड़तरे, उप महालेखाकार (प्रशासन)
श्रीमती एम डी वैजयंती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री देव प्रकाश गुप्ता, हिंदी अधिकारी

संपादक मंडल

श्रीमती नर्मदा कुमारी, वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री माशुकी अख्तर, कनिष्ठ अनुवादक

प्रकाशक

ईडीपी अनुभाग (लेखापरीक्षा-I)

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं ज़िम्मेदार हैं।

संदेश

इस कार्यालय की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका आशीर्वाद के 37वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। राजभाषा नीति के अनुसार "ग" क्षेत्र में स्थित होते हुए भी निरंतर हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करने वाले संपादकीय मंडल और पत्रिका के लिए योगदान देने वाले कर्मी अनिवार्य रूप से प्रशंसा के पात्र हैं।

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य के साथ प्रकाशित इस पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि और प्रतिभा मुखरित होती है। उनकी साहित्यिक प्रतिभा और व्यक्तिगत अनुभव के प्रदर्शन के लिए भी पत्रिका एक माध्यम बन जाती है। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

विमलेंद्र आनंद पटवर्धन

प्रधान महालेखाकार (ले.प.-II)

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि हमारे कार्यालय की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वास्तव में कार्यालयीन पत्रिकाएँ कार्यालय कर्मियों की रचनाधर्मिता का प्रतिबिंब होती हैं। इन मौलिक रचनाओं से उनके गुण, स्वभाव, चिंतन और आचार-विचार परिलक्षित होते हैं। भारत सरकार की आधिकारिक भाषा हिंदी होने से यह आशा की जाती है कि सभी कार्मिकों को हिंदी का ज्ञान होना चाहिए। इसीलिए कार्मिकों के हिंदी ज्ञान के प्रसार में बढ़ोत्तरी के लिए इन पत्रिकाओं का योगदान अधिक रहता है। संघ की राजभाषा नीति के कारण यह हम सभी का संवैधानिक और नैतिक दायित्व है कि हम रोज़मर्रा के कामों में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें। केंद्र सरकार भी इस नीति को लागू करने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार को ही अपनाती है। हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद भी सभी के सहयोग से राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा नीति के अनुपालन में सदैव अग्रसर रहता है।

अंत में, मैं पत्रिका के प्रकाशन में सभी रचनाकारों, सहयोगियों और संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई और अपनी शुभकामनाएं देती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार पत्रिका का प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

शांति प्रिया एस

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के कार्मिकों की रचनाधर्मिता व सृजनात्मकता को दर्शाती है। भाषा मनुष्य के विचारों को अभिव्यक्त करने का कार्य करती है। भाषा के माध्यम से जन्म लेने वाला सहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। क्योंकि साहित्य के द्वारा किसी भी समाज की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान हमें प्राप्त होता है। वह मनुष्य को मनुष्य से, अतीत को वर्तमान से, शब्द को अर्थ से जोड़ने का कार्य करता है। रूप जैसा भी हो, विधा जो भी हो, संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए साहित्य से अधिक सशक्त दूसरा कोई माध्यम नहीं है।

आगे, इस पत्रिका के 37वें अंक के सफल प्रकाशन में सतत योगदान देने वाले राजभाषा कार्मिकों तथा आशीर्वाद को राह दिखाने वाले लेखक व पाठक गण को आभार। आशा है कि आगामी वर्षों में भी 'आशीर्वाद' पत्रिका का प्रकाशन निर्वाध रूप से होता रहे।

दीपना

दीपना गोकुलराम

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

संदेश

यह हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। रचनाकारों ने पत्रिका में समाहित रचनाओं के लिए अपनी सृजनात्मकता और भावनात्मक प्रतिभा को उजागर किया है। इनकी लेखन शैली से साहित्यिक अभिरुचि प्रदर्शित होती है। वास्तव में संवेदनशील व्यक्ति ही उत्तम साहित्य का सृजन करता है और समाज में घटित घटनाओं को अपनी कल्पनाशीलता से विचारों को कलमबद्ध करता है। आशीर्वाद पत्रिका में जिन रचनाकारों ने अपना योगदान दिया है उन सभी को मैं बधाई देती हूँ। पत्रिका के संपादन और प्रकाशन कार्य से जुड़े हुए सभी राजभाषा कर्मियों एवं अन्य को भी मैं बधाई देती हूँ। साथ ही भविष्य में भी हिंदी गृह पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

मोनाली

मोनाली फड़तरे

उप महालेखाकार (प्रशासन/लेखापरीक्षा-I)

संपादकीय

भाषा के विभिन्न रूपों का स्थान सभी प्राणियों में सर्वोपरि है, चाहे वह मौखिक, लिखित या सांकेतिक हो। सभी प्राणियों के हाव-भाव, इच्छाएँ एवं आपसी संवाद भाषा के द्वारा ही होते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मानव सभ्यता के विकास में भाषा का सर्वाधिक महत्व है। मानव समाज के अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में रहने से उनकी भाषाएँ भी विभिन्न रहीं, परंतु मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास हुआ। यदि कहा जाय कि भाषा मानव के समस्त आविष्कारों की जननी है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। भाषा से ही ज्ञान-विज्ञान का अथाह भंडार समृद्ध हुआ है। हमारे देश में भी अनेकों भाषाएँ, बोलियाँ और उनकी लिपियाँ प्रचलित हैं। स्वाधीनता संग्राम के समय आजादी के दीवानों के बीच पारस्परिक संवाद की भाषा हिंदुस्तानी ही थी जो हिंदी और उर्दू के मिश्रण से बनी थी। हमारे देश की आजादी के बाद हमारे राजनेताओं ने एकमत से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया और संविधान में इसका प्रावधान बनाया। राजभाषा हिंदी का विकास भी क्रमिक रूप से वैदिक संस्कृत से आगे बढ़ते हुए लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से गुजरते हुए हिंदुस्तानी भाषा तक विभिन्न चरणों में हुआ है, क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है।

चूंकि हिंदी भारत देश की एक संपर्क भाषा के रूप में है और सरकार के कार्यों तथा नीतियों को जन-जन तक पहुँचाने का काम भाषा ही करती है। अतः केंद्र सरकार ने राजभाषा के प्रचार और प्रसार के लिए कार्मिकों के बीच प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के द्वारा राजभाषा नीति को अपनाया है। इसी नीति के फलस्वरूप केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है, ताकि कार्मिकों में हिंदी लिखने और पढ़ने के प्रति रुचि बढ़े। इन पत्रिकाओं में कार्मिकों की रचनाधर्मिता एवं सृजनात्मकता प्रदर्शित होती है। हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका **'आशीर्वाद' के 37वें अंक** के प्रकाशन से मुझे बहुत खुशी और गर्व की अनुभूति हो रही है। आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को समय निकाल कर अवश्य पढ़ें और अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं ताकि हम पत्रिका के आगामी अंकों में और सुधार कर इसे आकर्षक बना सकें। मेरा सभी कार्मिकों से एक और अनुरोध है कि अपने सरकारी कार्य को अधिक से अधिक राजभाषा में करने का प्रयास करें। आजादी के अमृतकाल में राजभाषा हिंदी को उसका वास्तविक हक दिलाने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए।

तो फिर देर किस बात की, उठाइए कलम और अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराइए, आपके बहुमूल्य सुझावों का हमेशा स्वागत है।

देव प्रकाश गुप्त
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

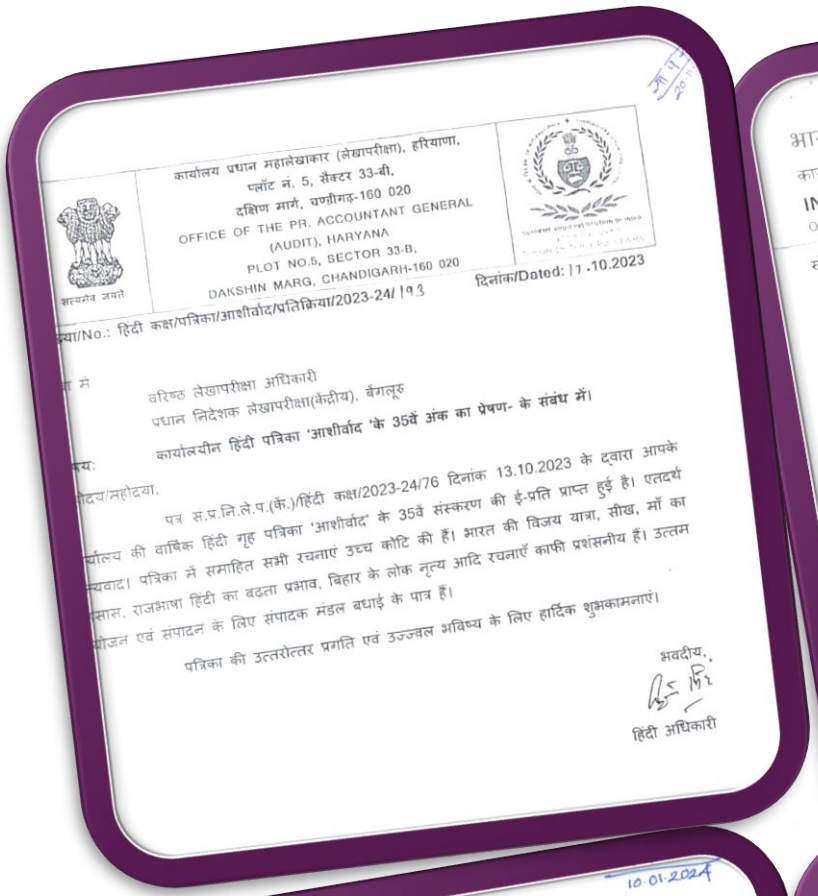

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

सत्यमेव जयते

...या/No.: हिंदी कक्ष/पत्रिका/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया/2023-24/ 193 दिनांक/Dated: 11.10.2023

...में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय), बैंगलूरु

...य: **कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद 'के 35वें अंक का प्रेषण- के संबंध में।**

...दय/महोदया,

पत्र सं.प्र.नि.ले.प.(कें.)/हिंदी कक्ष/2023-24/76 दिनांक 13.10.2023 के द्वारा आपके ...र्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ ...न्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। भारत की विजय यात्रा, सीख, माँ का ...सास, राजभाषा हिंदी का बढ़ता प्रभाव, बिहार के लोक नृत्य आदि रचनाएँ काफी प्रशंसनीय हैं। उत्तम ...योजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

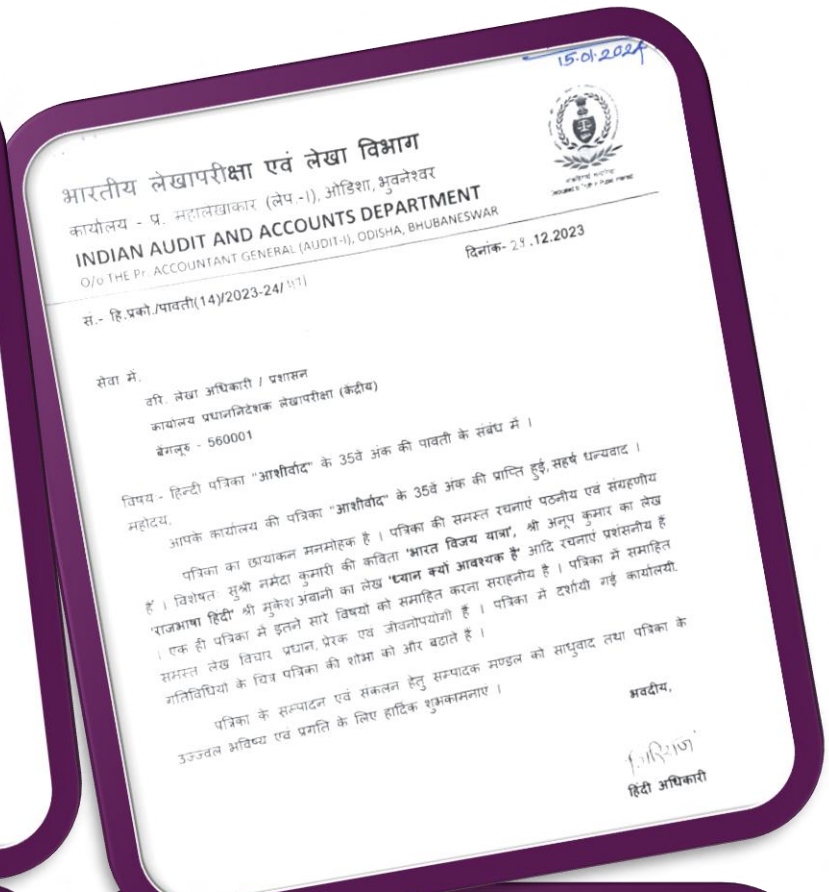

15.01.2024

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय - प्र. महालेखाकार (लेप.-I), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), ODISHA, BHUBANESWAR

दिनांक- 29.12.2023

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2023-24/ 971

सेवा में,
वरि. लेखा अधिकारी / प्रशासन
कार्यालय प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
बेंगलूरु - 560001

विषय - हिन्दी पत्रिका "**आशीर्वाद**" के 35वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "**आशीर्वाद**" के 35वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका का छायांकन मनमोहक है । पत्रिका की समस्त रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं । विशेषतः सुश्री नर्मदा कुमारी की कविता **'भारत विजय यात्रा'**, श्री अनूप कुमार का लेख **'राजभाषा हिंदी'** श्री मुकेश अंबानी का लेख **'ध्यान क्यों आवश्यक है'** आदि रचनाएं प्रशंसनीय हैं । एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना सराहनीय है । पत्रिका में समाहित समस्त लेख विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं । पत्रिका में दर्शायी गई कार्यालयी गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ाते हैं ।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

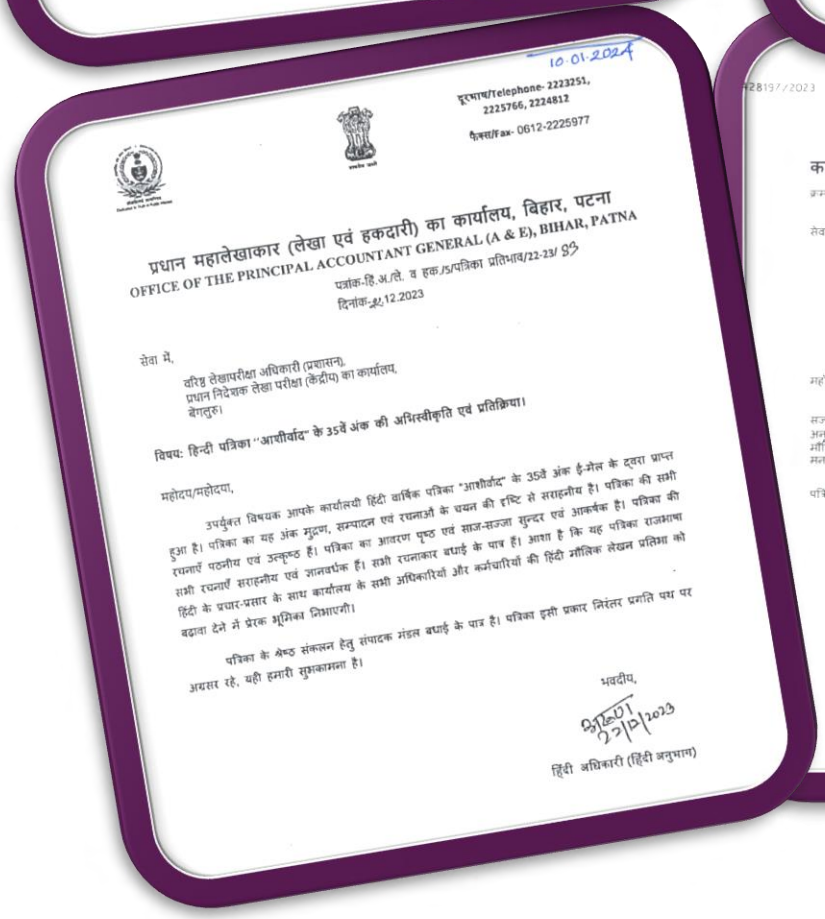

10.01.2024

दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812
फैक्स/Fax- 0612-2225977

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/22-23/ 83
दिनांक-22.12.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
बेंगलुरु।

विषय: हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" के 35वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालयी हिंदी वार्षिक पत्रिका "आशीर्वाद" के 35वें अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ठ हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएँ सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
27/12/2023

हिंदी अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

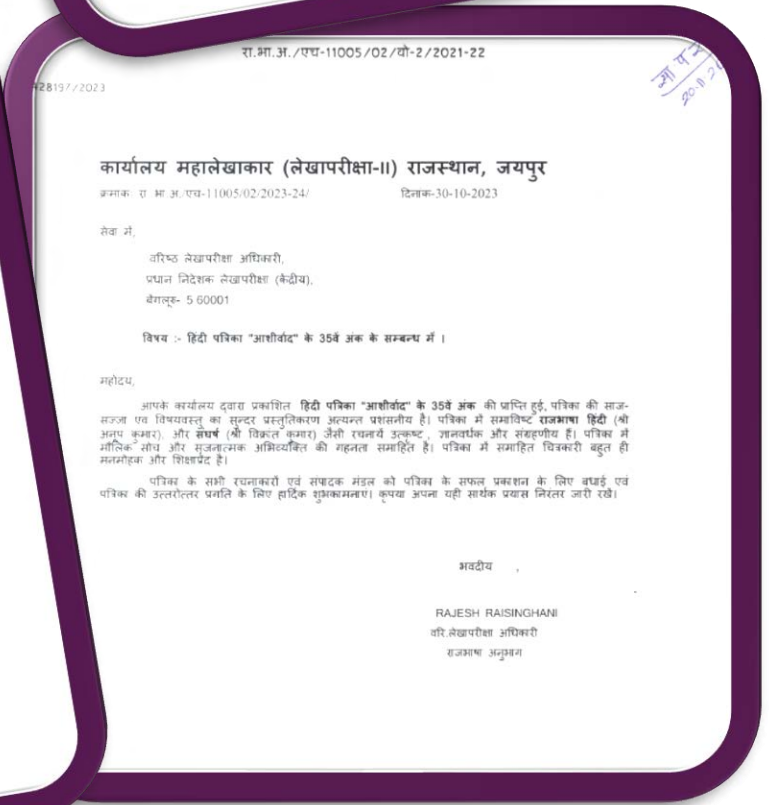

रा.भा.अ./एच-11005/02/यौ-2/2021-22

28197/2023

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2023-24/ दिनांक-30-10-2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
बैंगलूरु- 5 60001

विषय :- हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 35वें अंक के सम्बन्ध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 35वें अंक** की प्राप्ति हुई, पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट **राजभाषा हिंदी** (श्री अनूप कुमार), और **संघर्ष** (श्री विक्रांत कुमार) जैसी रचनायें उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका में समाहित चित्रकारी बहुत ही मनमोहक और शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर जारी रखें।

भवदीय,

RAJESH RAISINGHANI
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

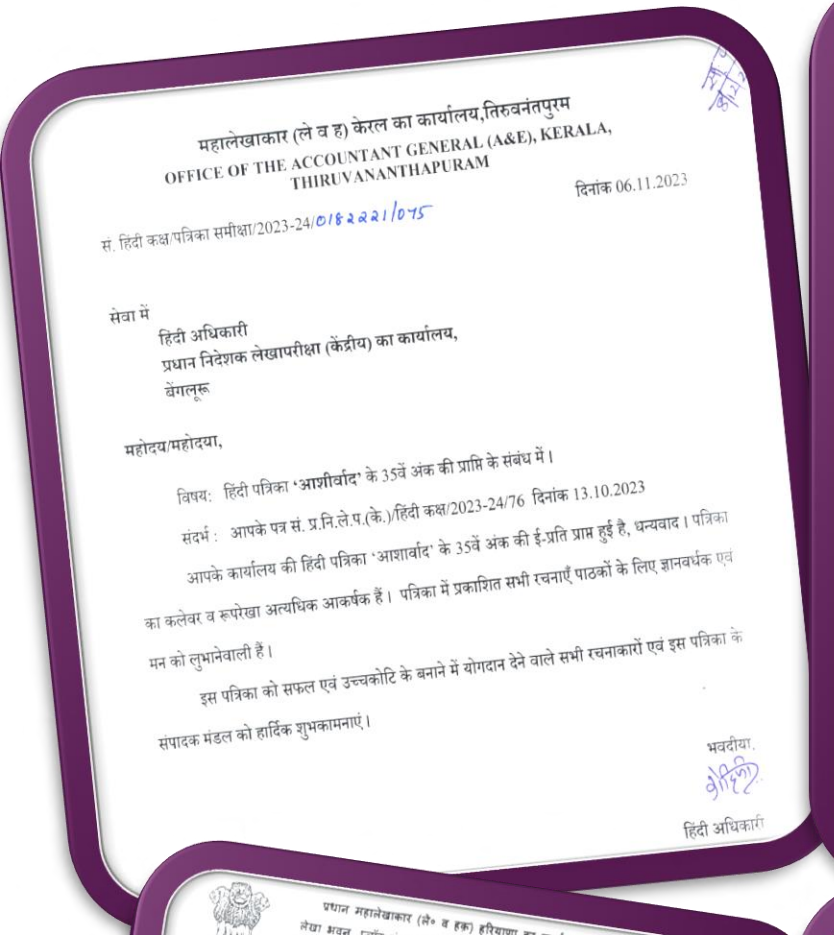

महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA,
THIRUVANANTHAPURAM

दिनांक 06.11.2023

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24/0182221/075

सेवा में
हिंदी अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
बेंगलूरू

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी पत्रिका **'आशीर्वाद'** के 35वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : आपके पत्र सं. प्र.नि.ले.प.(के.)/हिंदी कक्ष/2023-24/76 दिनांक 13.10.2023

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशार्वाद' के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन को लुभानेवाली हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि के बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

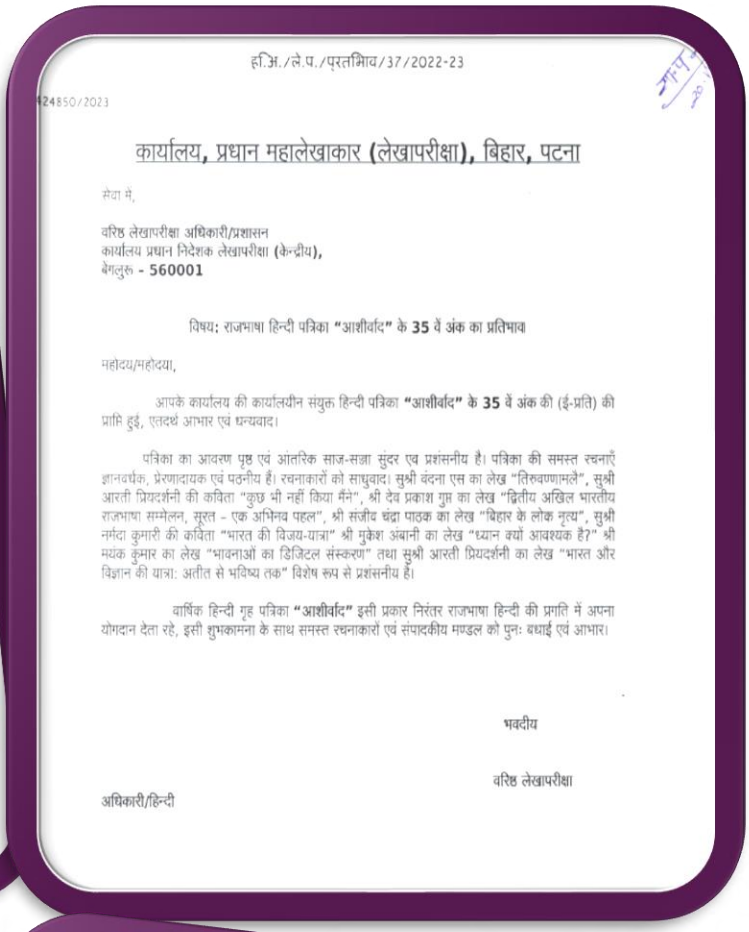

ह.अ./ले.प./प्रतभिाव/37/2022-23

424850/2023

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा **(केन्द्रीय),**
बेंगलुरु **- 560001**

विषय**:** राजभाषा हिन्दी पत्रिका **"आशीर्वाद"** के **35** वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की कार्यालयीन संयुक्त हिन्दी पत्रिका **"आशीर्वाद" के 35** वें अंक की (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई, एतदर्थ आभार एवं धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एव प्रशंसनीय है। पत्रिका की समस्त रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं पठनीय हैं। रचनाकारों को साधुवाद। सुश्री वंदना एस का लेख "तिरुवण्णामलै", सुश्री आरती प्रियदर्शनी की कविता "कुछ भी नहीं किया मैंने", श्री देव प्रकाश गुप्त का लेख "द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत - एक अभिनव पहल", श्री संजीव चंद्रा पाठक का लेख "बिहार के लोक नृत्य", सुश्री नर्मदा कुमारी की कविता "भारत की विजय-यात्रा" श्री मुकेश अंबानी का लेख "ध्यान क्यों आवश्यक है?" श्री मयंक कुमार का लेख "भावनाओं का डिजिटल संस्करण" तथा सुश्री आरती प्रियदर्शनी का लेख "भारत और विज्ञान की यात्रा: अतीत से भविष्य तक" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका **"आशीर्वाद"** इसी प्रकार निरंतर राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना योगदान देता रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं आभार।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी/हिन्दी

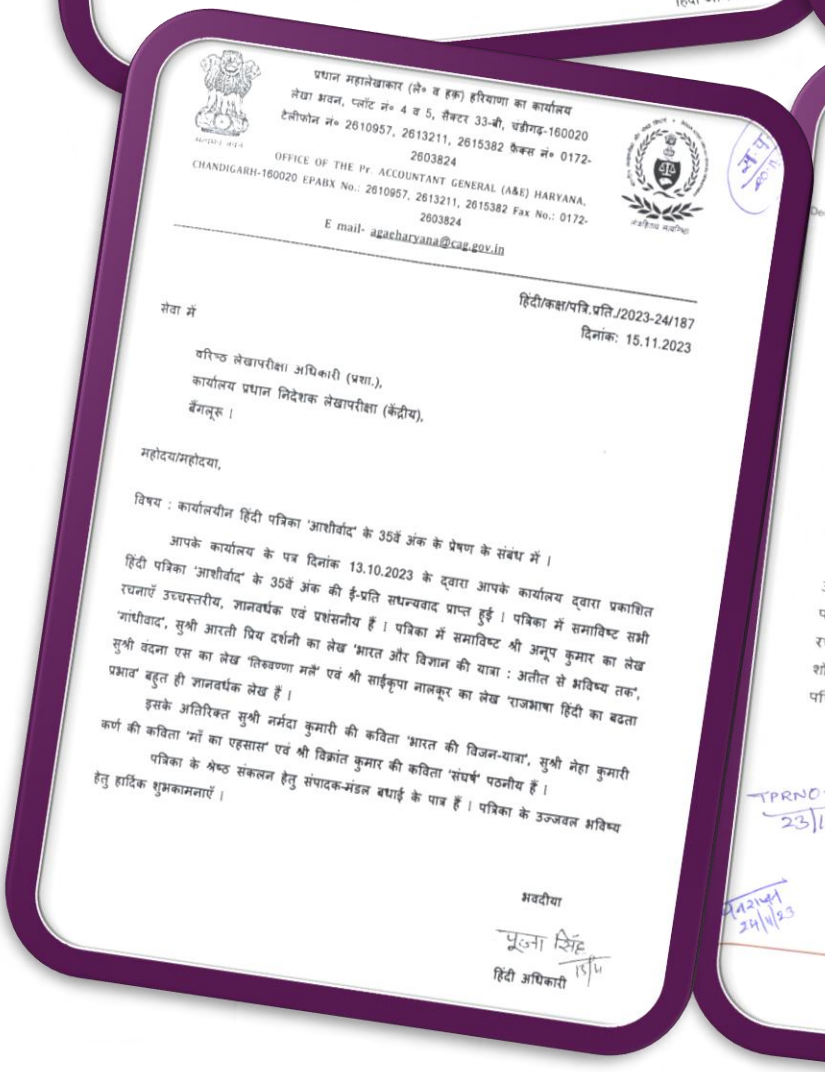

प्रधान महालेखाकार (ले० व हक) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं० 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020
टैलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA, CHANDIGARH-160020 EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail- agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2023-24/187
दिनांक: 15.11.2023

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
बैंगलूरु ।

महोदय/महोदया,

विषय : कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक के प्रेषण के संबंध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 13.10.2023 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट श्री अनूप कुमार का लेख 'गांधीवाद', सुश्री आरती प्रिय दर्शनी का लेख 'भारत और विज्ञान की यात्रा : अतीत से भविष्य तक', सुश्री वंदना एस का लेख 'तिरुवण्णा मलै' एवं श्री साईकृपा नालकूर का लेख 'राजभाषा हिंदी का बढता प्रभाव' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त सुश्री नर्मदा कुमारी की कविता 'भारत की विजन-यात्रा', सुश्री नेहा कुमारी कर्ण की कविता 'माँ का एहसास' एवं श्री विक्रांत कुमार की कविता 'संघर्ष' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह

हिंदी अधिकारी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

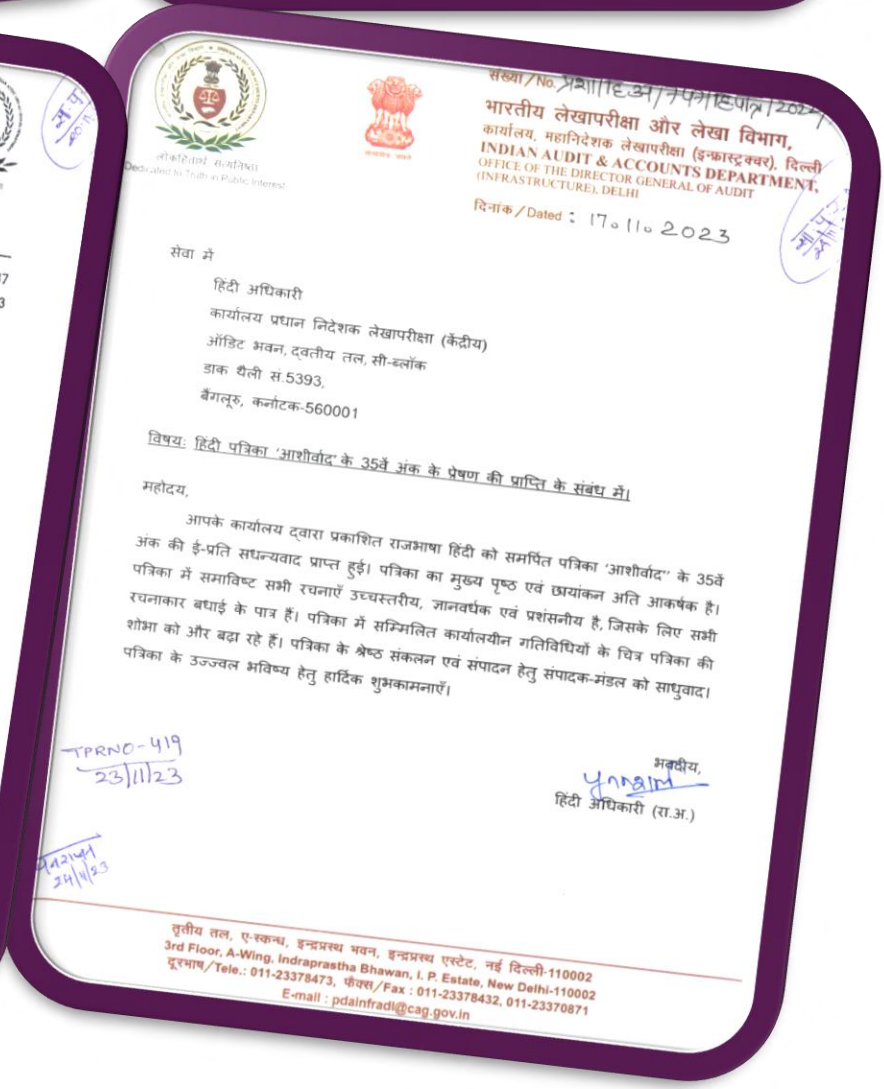

संख्या/No. प्रशा/हिं.अ./पत्रिका/पत्र/2024
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक/Dated : 17.11.2023

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
ऑडिट भवन, द्वतीय तल, सी-ब्लॉक
डाक थैली सं.5393,
बैंगलूरु, कर्नाटक-560001

विषय: हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक के प्रेषण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं छायांकन अति आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है, जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन एवं संपादन हेतु संपादक-मंडल को साधुवाद। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

TPRNO-419
23/11/23

भवदीय,
हिंदी अधिकारी (रा.अ.)

तृतीय तल, ए-स्कन्ध, इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan, I. P. Estate, New Delhi-110002
दूरभाष/Tele.: 011-23378473, फैक्स/Fax : 011-23378432, 011-23370871
E-mail : pdainfradl@cag.gov.in

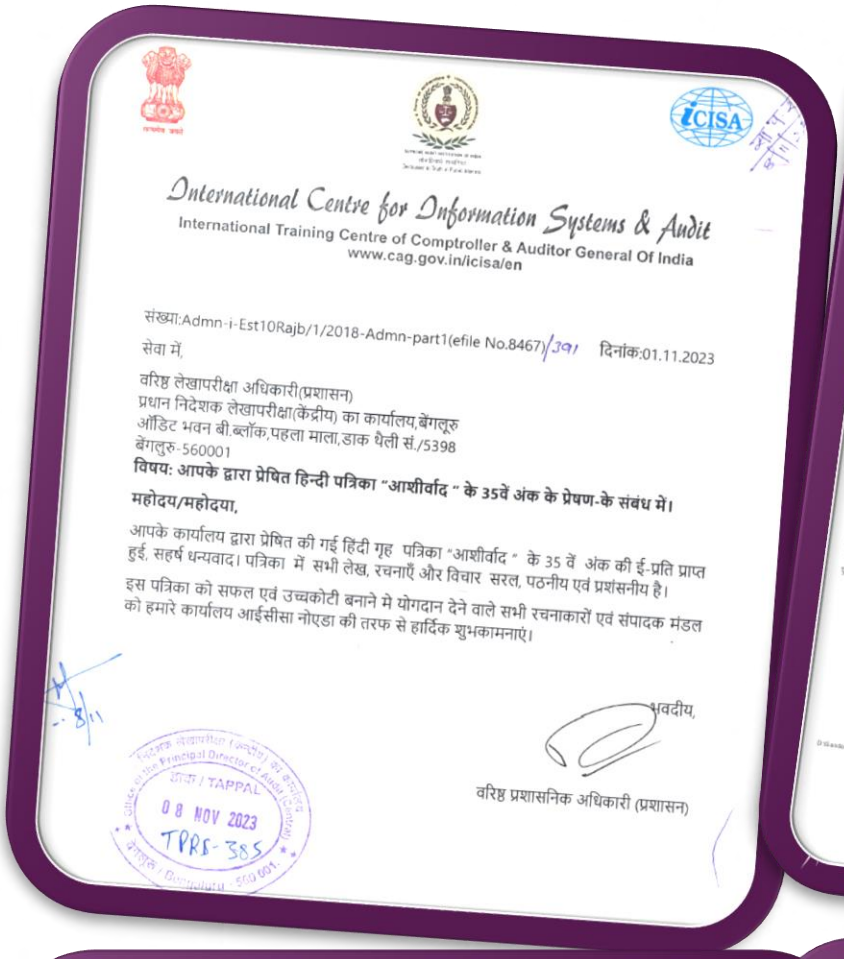

International Centre for Information Systems & Audit

International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India

www.cag.gov.in/icisa/en

संख्या:Admn-i-Est10Rajb/1/2018-Admn-part1(efile No.8467)/391 दिनांक:01.11.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय,बेंगलूरु
ऑडिट भवन बी.ब्लॉक,पहला माला,डाक थैली सं./5398
बेंगलुरु-560001

विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद " के 35वें अंक के प्रेषण-के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद " के 35 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएँ और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय है। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने मे योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

डाक / TAPPAL 08 NOV 2023 TPRS-385

सं. हिं. प्रशा /2023-24/95

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, बैंगलोर-560001

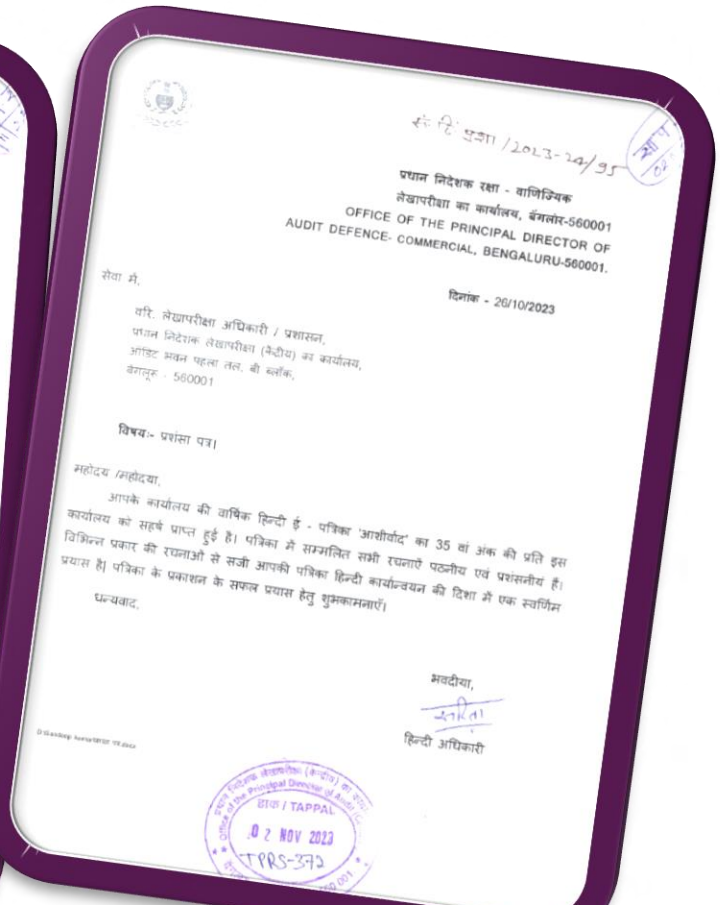

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

सेवा में,

दिनांक - 26/10/2023

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
ऑडिट भवन पहला तल, बी ब्लॉक,
बेंगलूरु - 560001

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका 'आशीर्वाद' का 35 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

सरिता

हिन्दी अधिकारी

डाक / TAPPAL 02 NOV 2023 TPRS-372

Admn/रा.भा./05(671)/2022-23

431029/2023

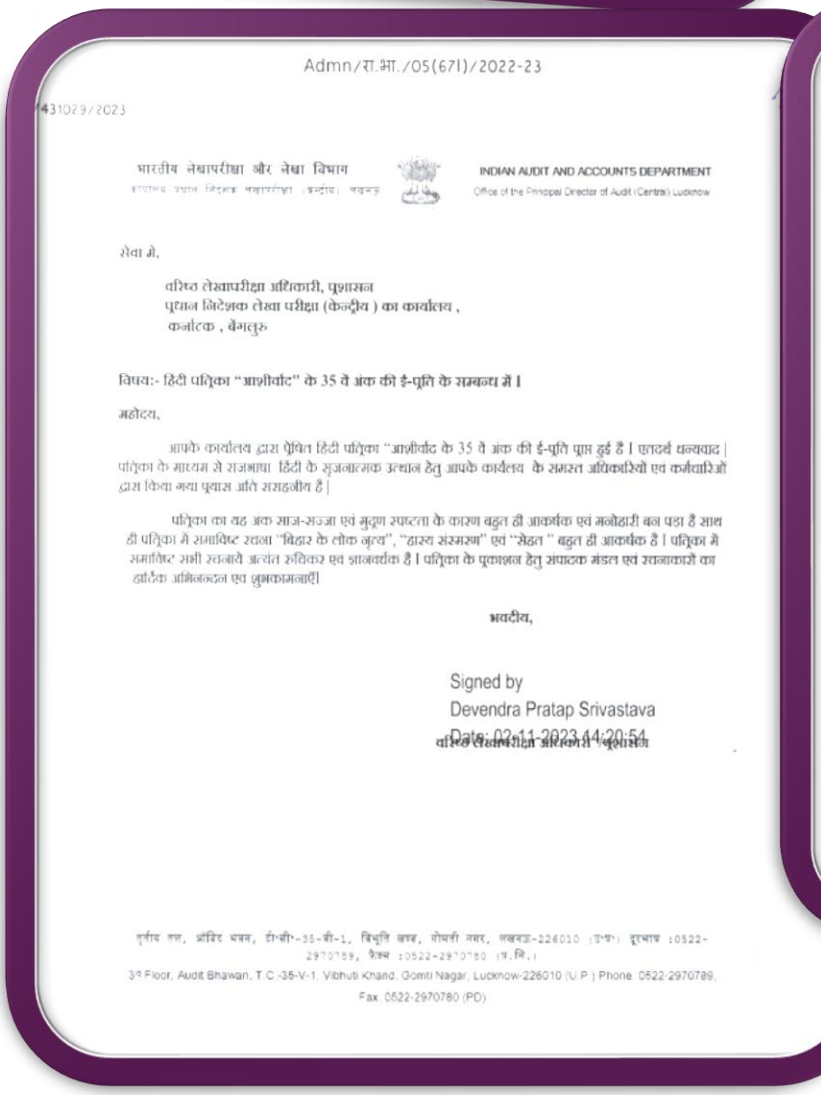

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

सेवा मे,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन
प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय ,
कर्नाटक , बैंगलुरु

विषय:- हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 35 वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद के 35 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियो एवं कर्मचारिओं द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "बिहार के लोक नृत्य", "हास्य संस्मरण" एवं "सेहत " बहुत ही आकर्षक है | पत्रिका मे समाविष्ट सभी रचनाये अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है | पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एव शुभकामनाएँ|

भवदीय,

Signed by
Devendra Pratap Srivastava
Date: 02-11-2023 14:20:54

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी॰सी॰-35-वी-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ॰प्र॰) दूरभाष :0522-2970789, फैक्स :0522-2970780 (प्र.नि.)

3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone 0522-2970789, Fax 0522-2970780 (PD)

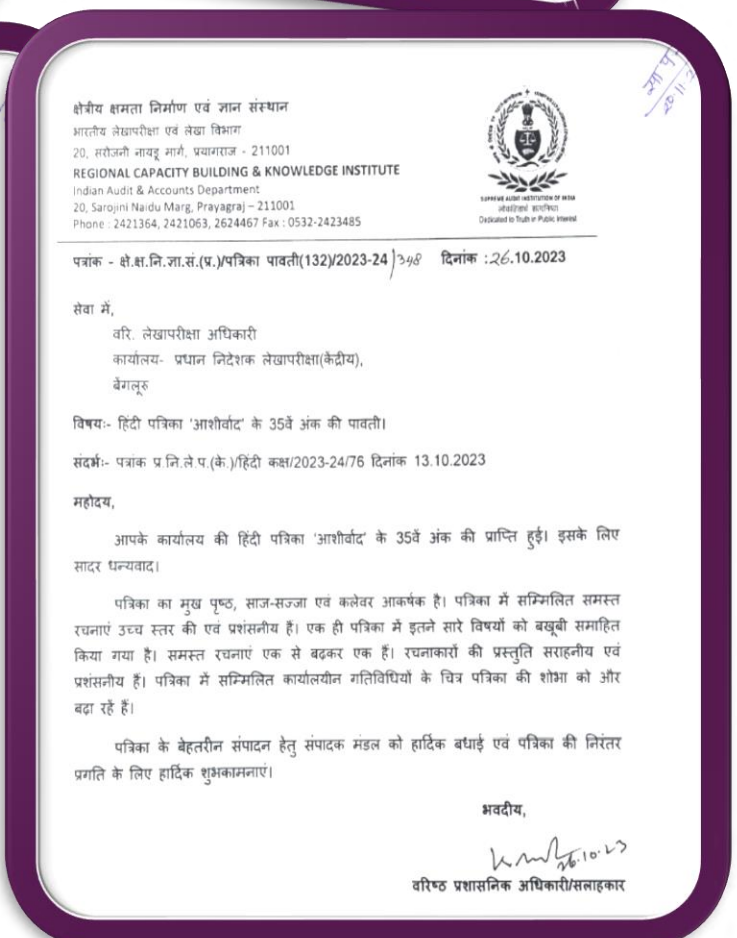

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/348 **दिनांक :26.10.2023**

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय- प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय),
बेंगलूरु

विषय:- हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रांक प्र.नि.ले.प.(के.)/हिंदी कक्ष/2023-24/76 दिनांक 13.10.2023

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ, साज-सज्जा एवं कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। रचनाकारों की प्रस्तुति सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहें हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

26.10.23

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

Indian Audit & Accounts Department

Office of The Director General of Audit (Central), Chandigarh

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

डीजीए/राजभाषा/सन्देश/2023-24/ 303 दिनांक 6/11/23

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी(हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
कर्नाटक, बेंगलूरू। 560 001

विषयः– हिंदी ई-पत्रिका "आशीर्वाद " के 36 वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद " के 36 वें अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक- मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

सधन्यवाद।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

ह.क./पत्रिकापावती/2021-22

216/2023

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/102 दिनांक:-25/10/2023

25 OCT 2023

सेवा मे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
ऑडिट भवन, पहला माला,
बी ब्लॉक, डाक थैली सं. 5398,
बेंगलूरु - 560 001

Office of the Principal Director of Audit (Central)
डाक / TAPPAL
30 OCT 2023
TPRS 367
बेंगलूरु / Bengaluru - 560 001.

To,
Hindi Officer,
Office of the Principal Director of Audit (Central),
Audit Bhavan, 1st Floor,
'B' Block, P.B. No. 5398,
Bangalore – 560 001

विषय: राजभाषा हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 35 वें अंक के प्रेषण संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा हिंदी पत्रिका, **'आशीर्वाद'** के 35 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा चित्ताकर्षक हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.काम्प्लेक्स, डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916, FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	विधा	लेखक	पृष्ठ सं.
1)	क्षितिज नया गढ़ना होगा	कविता	अमित मोहन झा	1
2)	विनाश से नवनिर्माण तक	कहानी	मयंक कुमार मयंक	3
3)	मातृभाषा	कविता	संजीव चन्द्र पाठक	6
4)	गड़िया लोहार-भारत की घूमंतू प्रजाति	लेख	सोनाक्षी सक्सेना	7
5)	शिक्षा समृद्धि का संकेत	कविता	नीरज कुमार	10
	ऑडिट दिवस 2023			12
6)	युवाओं के लिए योग का महत्व	लेख	कुमार अग्निवेश	15
7)	एक जिम्मेदार बेटा	लेख	अर्चना प्रजापति	20
8)	करने से पहले	कविता	रेजिना जॉर्ज	22
9)	धर्मस्थल (आस्था या पिकनिक स्थल)	लेख	साधना सिंह	24
10)	किताबों से इश्क	कविता	मयंक कुमार मयंक	26
	विभिन्न गतिविधियाँ 2023-24			28
11)	संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार	लेख	ओम कुमार अड़लक	31
12)	सच्चा मित्र	कहानी	सोनाक्षी सक्सेना	37
13)	क्या लिखूँ	कविता	अमित मोहन झा	40
14)	मताधिकार	कविता	संजीव चन्द्र पाठक	42
15)	आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता	लेख	कुमार अग्निवेश	44
	सांस्कृतिक कार्यक्रम 2023-24			49
16)	अनुशासन का महत्व	लेख	काजल	50
17)	मेरा गाँव उदास रहता है	कविता	देव प्रकाश गुप्ता	52
18)	वन स्माइल प्लीज	कहानी	रेजिना जॉर्ज	56
19)	जंग में उमंग जिंदगी	कविता	आर संदीप सिंह	58
20)	वृक्षारोपण	कविता	अपर्णा कुमारी	60
21)	हिंदी पखवाड़ा-2023 की झलकियाँ			62
22)	हिंदी पखवाड़ा 2023 का परिणाम			65
23)	सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची			69

क्षितिज नया गढ़ना होगा

आज का दिन जैसा भी हो, कल का दिन अच्छा होगा,

रात भयानक काली है पर, सुबह बड़ा सच्चा होगा।

माना कि चलना है दुष्कर, काँटो-सी बिखरी राहों पर,

जो धुन के मतवाले हैं, उनको तो नित बढ़ना होगा।

आकाशदीप से तुम सीखो, नित जलकर राह दिखाना है,

कर्तव्य राह में जलकर ही, लेकिन कर्तव्य निभाना है।

'निशा-आगमन' जीवन में, जीवन का अंत नहीं होता,

नित नए उपक्रम कर-कर के, आशा के दीप जलाना है।

दूर नहीं वो लौ प्रकाश की, 'अमित' तुम्हें चलना होगा,

कालों के मुख पर रख पैर तुझे, क्षितिज नया गढ़ना होगा।

अमित मोहन झा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा-II

विनाश से नवनिर्माण तक

बहुत समय पहले की बात है। बिहार के एक सुदूर प्रांत में दरियापुर नामक एक गाँव था। लगभग 300 की जनसंख्या वाले इस गाँव में सभी लोग कृषि तथा पशुपालन द्वारा खुशी-खुशी जीवनयापन कर रहे थे। तभी कुछ ऐसा हुआ जिसने सभी गाँव वालों के जीवन को हमेशा के लिए बदल कर रख दिया। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि "मानव सदा प्राकृतिक आपदाओं के समक्ष खुद को असहाय महसूस करता है।" इस गाँव के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। एक रात सभी लोग सो रहे थे, अचानक से

कोसी नदी की वजह से गाँव में बाढ़ आई और साथ मे प्रलय लेकर आई। जब तक लोग संभल पाते तब तक सब कुछ बह चुका था वर्षों की जमापूंजी खेत खलिहान सबकुछ। किसी तरह लोग खुद की और पशुओं की जान बचाकर गाँव से दूर एक ऊँचे टापू पर पहुँचे।

जान तो बच गई पर लोग अंदर से टूट चुके थे। कहते हैं कि 'एक बेहतर भविष्य की उम्मीद ही लोगों को जीवन जीने की शक्ति देती है' परंतु यहाँ तो रातों-रात सभी की आशाओं पर पानी फिर गया था। लोग कहने लगे थे कि जब कुछ बचा ही नहीं तो हम भी जी कर क्या करेंगे और आत्महत्या जैसे विकल्पों पर विचार करने लगे। परंतु उसी गाँव का मुखिया 70 साल का बुजुर्ग था जिसकी विद्वता की चर्चा संपूर्ण प्रदेश में थी। वह अपने सामने अपने गाँव के लोगों को हिम्मत कैसे हारने दे सकता था उसने सभी लोगों को बैठाया और सभा को संबोधित करते हुए कहा -

"सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते हैं,
क्षण एक नहीं धीरज खोते हैं,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।"

उन्होंने कहा कि हम नई शुरुआत करेंगे और प्रकृति को दिखा देंगे कि 'मानव जब जोर लगाता है तब पत्थर पानी बन जाता है।'

वहाँ से लगभग 250 किमी दूर सुंदर पहाड़ी नामक जगह थी जो किसी जमाने में अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थी। वहाँ कुछ घुमंतू लोगों ने अपनी बस्ती बसाई थी जो अब निर्जन अवस्था में पड़ी थी। मुखिया जी की सलाह पर इन्होंने वहाँ पर अपना गाँव दोबारा बसाने का निर्णय लिया और गाँव का नाम रखा 'आदर्श गाँव'। कहा जाता है कि रोटी कपड़ा और मकान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है मकान की तो व्यवस्था हो गई परंतु रोटी और कपड़े के लिए चाहिए थी आजीविका। दुर्भाग्य से आदर्श गाँव के आसपास की जगह उपजाऊ नहीं थी इस वजह से उन्हें आजीविका के लिए कोई और माध्यम तलाशना था। उस गाँव के मुखिया को खटिया बुनने से लेकर बुनकरी तक मैं विशेषज्ञता प्राप्त थी। उस गाँव के बीचों बीच एक कुआँ था और उसके आसपास की जमीन खाली पड़ी थी। यह तय हुआ कि पुरुष पशुपालन का काम देखेंगे और लकड़ियाँ काट कर लाएंगे तथा महिलाएँ इस खाली जगह में पशुओं को दाना-पानी देंगी और बुनकरी तथा खटिया बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करेगी।

गाँव वाले जंगल से लाई गई लकड़ियों की मदद से शीघ्र ही उच्च कोटि की खाट बनाने

लगे। ये लोग बनाई गई खाट तथा बुनकरी से बने बनाए वस्त्रों को हर हफ्ते पास के हाट (ग्रामीण बाजार) में बेचकर आते और बदले में अनाज तथा मूलभूत वस्तुएँ लेकर आते। उनके उच्च कोटि के कार्य की वजह से इनकी प्रसिद्धि जल्द ही संपूर्ण इलाके में फैल गई। इन्हें बड़े-बड़े ऑर्डर मिलने लगे और मात्र कुछ ही महीनों में गाँव का कायाकल्प हो गया। कहते हैं अच्छे कार्य जल्दी ही लोगों तक अपनी पहुँच बनाते हैं। इन्हें भारत सरकार द्वारा उच्च गुणवत्ता के सामान बनाने के लिए पुरस्कृत किया गया। जल्द ही पास में एक स्कूल भी खुल गया और नए-नए कस्बे बसने लगे इस गाँव की कहानी विनाश से नव निर्माण की कहानी थी जो एक किंवदंती बन गई इस गाँव की कहानी को स्कूल के पाठ्यक्रम में भी जगह मिल गई।

सच ही कहा गया है-

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में, मनुज नहीं लाया है,

अपना सुख उसने अपने, भुजबल से ही पाया है,

प्रकृति नहीं डरकर झुकती है, कभी भाग्य के बल से,

सदा हारती वह मनुष्य के, उद्यम एवं श्रम-बल से।

मयंक कुमार मयंक
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा-I

मातृभाषा

अभिनंदन है मातृभूमि को जिसके तप से अस्तित्व हमारा

नव उर्जा का होता संचार सुन अपनी माटी की भाषा

नहीं होगा ऋणमुक्त मातृभूमि से ममता और स्नेह का भाव

जीवन के हर पड़ाव में मातृभाषा का करो वंदन

भाषा है अनेक लेकिन मातृभाषा एक जिसको सुन मंत्रमुग्ध हो सब

बच्चे की पहली किलकारी मातृभाषा में उनकी बोली

चीन, जापान, जर्मनी में देखो सबको है अपनी मातृभाषा पर अभिमान

हम भी क्यों न करें वंदन जब मातृभाषा हो विकास की पहचान

भूले नहीं कभी हम मातृभाषा को चाहे कहीं करे रोजगार

पहचान हमारी यही दिलाती इसका नहीं करे बलिदान

संजीव चन्द्र पाठक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा-II

गड़िया लोहार- भारत की घूमंतू प्रजाति

मुझे बचपन से ही घुमंतू जीवन बहुत आकर्षित करता था। नई-नई जगह घूमना, नई संस्कृति, नये रीति-रिवाज देखना और जीवन में नए अनुभव ग्रहण करना, यह सब सोचकर ही मैं काफी रोमांचित हो उठती थी। इसलिए मैंने जब कक्षा की पुस्तकों में गड़िया-लोहार प्रजाति के जीवन के बारे में पढ़ा तो मैं उनके बारे में जानने के लिए लालायित हो उठी। इसका मौका मुझे मिला जब मैं वर्ष 2017 में सपरिवार जोधपुर से 70 किलोमीटर दूर ओसियां नाम के गाँव में सच्चिया माता के मंदिर के दर्शन करने हेतु गई। जब हम वहाँ पहुंचे तो मैं यह देखकर हैरान थी कि उस छोटे से गाँव में भी भ्रमण करने के लिए हजारों सैलानी आए हुए थे, जिसमें विदेशी सैलानियों की भी काफी संख्या थी। स्थानीय निवासियों से बात करने पर पता चला कि यहाँ 8वीं से 12वीं शताब्दी के निर्मित जैन व हिंदू मंदिर है जिनमें नायाब व बेजोड़ कलाकृतियाँ हैं। उनकी बारीक कारीगरी को देखकर कोई भी दाँतों तले ऊँगली दबा देगा। उन मंदिरों को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि भारत में अनगिनत चमत्कारी कलाकार थे। विदेशी भी उस कला को देखकर मंत्रमुग्ध हो रहे थे।

सायंकाल हम रेगिस्तान देखने पहुँचे तो वहाँ कुछ बच्चे करतब दिखा रहे थे, कुछ

नृत्य दिखा रहे थे और पास जाकर पता चला कि वह दस परिवार की गड़िया-लोहार प्रजाति थी। मेरे बचपन के आकर्षण के कारण मैं उनकी ओर खिंची चली गयी। मैंने देखा कि उनकी कुछ औरतें रात्रि भोजन तैयार करने में तल्लीन थी, पुरुष पर्यटकों को ऊँट सवारी करवाने में मशरूफ थे एवं कुछ औरतें करतब दिखाने वाले बच्चों का मेकअप कर रहीं थीं। वे सभी पुरुष एवं महिलाएँ अनपढ़ थे परंतु उनका व्यावहारिक ज्ञान काबिले तारीफ था। उन महिलाओं ने करतब दिखाने वाले बच्चों का मेकअप इतने सलीके से किया था कि आधुनिक समाज के बड़े संस्थानों से बड़ी-बड़ी डिग्री लेकर मेकअप करने वाले आर्टिस्टों से वे कमतर न थी। उन बच्चों की रंग-बिरंगी पोशाकें भी उन महिलाओं की हाथ की मेहनत थी। उनके रंगों का चयन और डिजाइन किसी फैशन डिजाइनर को मात देने वाला था। उन बच्चों ने इतनी छोटी उम्र में हैरत अंगेज करतब दिखाए। नन्ही लड़कियाँ पतली-सी रस्सी पर, जो जमीन से करीब 9-10 फुट की ऊँचाई पर थी, करतब दिखाते हुए चल रही थी। कुछ लड़के सारंगी और ढ़ोल बजा रहे थे, कुछ लड़के-लड़कियाँ ऊँची आवाज में लोकगीत गा रहे थे, कुछ बच्चे उन धुन पर आग से खतरनाक खेल खेलते हुए नृत्य कर रहे थे और करतब दिखा रहे थे। सभी पर्यटक अपलक उन बच्चों को निहार रहे थे।

रात्रि भोजन की तैयारी से निवृत्त होकर महिलाएं पर्यटकों को मेहंदी लगाने बैठ गई, मैं भी मेहंदी लगाने के बहाने उनके अनुभव साझा करने हेतु उनके पास बैठ गई। बातों ही बातों में जब मैंने उन्हें एहसास करवाया कि उनका जीवन कितना विशेष एवं रोमांचक है और उनका उत्तर सुनने की ललक थी, परंतु मेरा सारा उत्साह तब काफूर हो गया जब उन्होंने बताया कि हर क्षेत्र में भिन्न-भिन्न पर्यटन सीजन के दौरान बिना किसी सुरक्षा के बैलगाड़ी में 2-3 दिन तक की अनवरत लंबी यात्रा करनी पड़ती है। रात्रि में यात्रा करने के दौरान वे बिजली जैसी आधारभूत सुविधाओं से भी वंचित रहते हैं इसलिए अंधेरा होने से पहले उन्हें भोजन इत्यादि दिनचर्या से निवृत होना पड़ता है। कई बार ऐसा होता है कि पर्यटक उनके करतब तो देखते है, सोशल मीडिया पर फेमस होने के लिए पोस्ट करने हेतु वीडियो और फोटो भी लेते है परंतु बिना पैसे दिए चले जाते है। पर्यटकों से पैसे मांगने पर वो झगड़ा करते है या पुलिस को बुला लेते है। पुलिस भी पर्यटकों की सुरक्षा का अधिकार के कारण उनका साथ देती है और इस प्रजाति को अपनी ही मेहनत की कमाई से वंचित रहना पड़ता है। इस प्रजाति को पुलिस से कोई सुरक्षा नहीं मिल पाती है क्योंकि ये किसी भी स्थान के स्थाई निवासी नहीं है और न ही इनके पास भारत की कोई आधिकारिक आईडी है। एक महिला ने तो गमगीन होकर बताया कि कई बार ऐसा होता कि उन्हें भूखा सोना पड़ता है क्योंकि उनकी

स्थाई आमदनी न होने की वजह से पर्याप्त राशन नहीं आ पाता है और कई दुकानदार उधार देने से डरते है कि कहीं उधार लेकर ये लोग रातों-रात गायब ना हो जाए।

जब मैंने पूछा कि इतना अभावग्रस्त जीवन जीने के बजाय यह प्रजाति स्थाई आमदनी का स्रोत ढूंढकर एक स्थान के निवासी होकर क्यों नहीं बस जाते तो उन्होंने बताया कि उनके पूर्वजों ने मेवाड़ शासक महाराणा प्रताप के सामने यह शपथ ली थी कि जब तक महाराणा प्रताप मुगलों को हराकर चित्तौड़गढ़ पर विजय प्राप्त कर नहीं कर लेते तब तक यह प्रजाति घूमंतू जीवन यापन करेगी, दुर्भाग्यवश महाराणा प्रताप विजय प्राप्त नहीं कर पाये और यह प्रजाति आज भी अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए वचन निभा रही है। मेरा दंडवत प्रणाम है ऐसी प्रजाति एवं उनके त्याग को। यह प्रजाति छोटी आमदनी हेतु हर तरह का कार्य करती है जैसे: मिट्टी के बर्तन बनाना, काले मैटल के आभूषण बनाना, सजावटी वस्तुएँ बनाना, छोटे-छोटे खिलौने बनाना इत्यादि। परंतु इसे बेचने में भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आम आदमी इन्हीं वस्तुओं के मुँह-मांगे दाम देने को तैयार रहते है, परंतु इन गरीबों से 10 रुपए के लिए भी मोल-भाव करते है। ऐसे कड़वे अनुभव सुनकर मेरा मन भी खट्टा हो गया। इतना हुनर होने के बाद भी यह प्रजाति कितनी अभावग्रस्त है। इसके लिए कहीं तक हम भी जिम्मेदार हैं। हम इतने आर्थिक सम्पन्न है कि मॉल में ₹ 3999/- रूपये की खरीद कर अपना 1 रुपया मांगने में शर्माते है परंतु गरीब फुटकर व्यापारियों, ठेले वालों, रिक्शे वालों आदि से 5-10 रूपये का मोलभाव करने में नहीं चूकते। उस दिन से मैंनें संकल्प लिया कि ऐसे गरीब लोग जो भीख मांगने की बजाय कोई भी छोटा काम करके ईमानदारी की रोटी खाना पसंद करते है उनसे कभी भी मोल-भाव नहीं करूँगी। उस दिन के बाद से घूमंतू जीवन का सारा आकर्षण हवा में छूमंतर हो गया।

सोनाक्षी सक्सेना
कनिष्ठ अनुवादक
लेखापरीक्षा-I

शिक्षा: समृद्धि का संकेत

शिक्षा की राह पर चलो, नव ज्ञान के सागर में डूब जाओ।

जीवन के रंग और सपने देखो, विचारों की ऊँचाइयों को छू जाओ।

अशांति के दुःखों को भुलाकर, नये उत्साह से अग्रसर हो जाओ।

ज्ञान की बातों में रमण करो, अग्नि समान तेजस्वी बन जाओ।

शिक्षा से ही सफलता की यात्रा है, सपनों को हकीकत में पिरो जाओ।

अपने अर्जित ज्ञान से जगमगाते हुए, समृद्धि के संगीत में रंग जाओ।

ज्ञान के आलोक में बनता है नया सवेरा, अगले कदमों में निश्चित भविष्य को ढूँढो।

शिक्षा के प्रेरणा से भरी राह पर चलो, जीवन के सफर में नव दिशा को पाओ।

शिक्षा है ज्ञान की अमृत धारा, ज्ञान ही हमें ऊँचा उठाती है

यह समृद्धि का बुनियादी स्तंभ और सफलता दिलाती है।

शिक्षा की महत्वपूर्ण रोशनी में हम सभी चलते हैं,

समृद्धि के सपनों को साकार करते हुए, ज्ञान की धारा से हम नव-निर्माण करते हैं,

शिक्षा के माध्यम से समृद्धि का निर्माण करते हैं।

शिक्षा हमारे विकास का केंद्र है, हर सपने की दिशा का संकेत हैं

ज्ञान के महासागर में हम डूबते हैं, समृद्धि के पर्वतों पर चढ़ते हुए।

शिक्षा की महत्वपूर्ण रोशनी में हम सभी चलते हैं, समृद्धि के सपनों को साकार करते हुए।

ज्ञान की धारा से हम नव-निर्माण करते, शिक्षा के माध्यम से समृद्धि का निर्माण करते हैं।

शिक्षा ही हमारे जीवन की अमृत धारा है, जो हमें ऊँचाइयों की ओर ले जाती है।

ज्ञान की चमक में हम रंग जाते हैं, शिक्षा के माध्यम से समृद्धि का निर्माण करते हैं।

नीरज कुमार
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा– II

ऑडिट दिवस 2023 की कुछ झलकियाँ

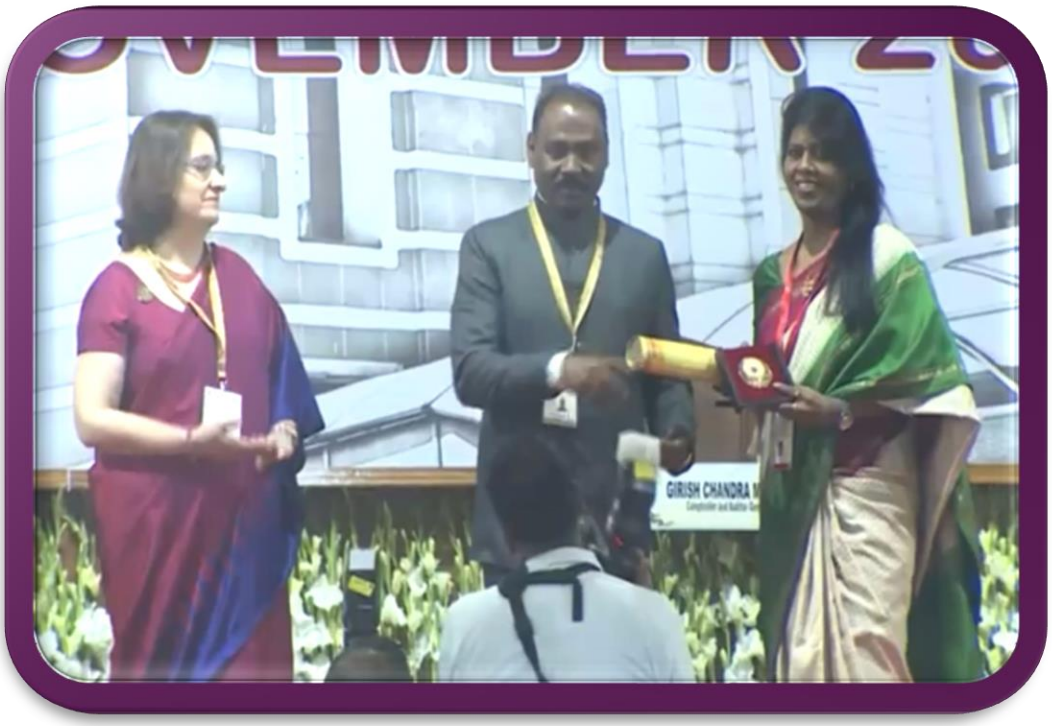

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा श्रीमती शांति प्रिया. एस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) को ऑडिट दिवस 2023 के अवसर पर पुरस्कार प्रदान किया गया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने कर्नाटक क्षेत्र कल्याण विकास बोर्ड की कार्य प्रणाली पर निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट की टीम को पुरस्कार प्रदान किया।

कर्नाटक के राज्यपाल महोदय का स्वागत करते हुए सभी विभागाध्यक्ष

ऑडिट दिवस के समापन समारोह में अभ्युदय पत्रिका का विमोचन

कैरम बोर्ड प्रतियोगिता

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में वॉकथॉन में भाग लेते हुए कार्यालय के सदस्य

वॉलीबॉल खेल में भाग लेते कार्यालय के सदस्य

ऑडिट दिवस पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए थ्रो बॉल की महिला टीम

युवाओं के लिए योग का महत्व

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में युवा कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दवाब से गुजर रहें हैं, इन सब के पीछे काफी हद तक निरंतर हो रहे परिवर्तन और सामाजिक दवाब जिम्मेदार हैं। आज युवा पीढ़ी को भागम-भाग वाली जिंदगी में अपने जीवन को बदलने के लिए योग की ओर रुख करना चाहिए। योग एक अभ्यास के रूप में भारत में प्राचीन समय से प्रचलित है तथा वैश्विक स्तर पर योग भारत की एक अमूल्य धरोहर है जिससे पूरा विश्व लाभान्वित हो रहा है। योग के अभ्यास के फलस्वरूप युवाओं के शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है जिससे आत्म-स्वीकृति की वृद्धि होती है।

योग युवा वर्ग को शारीरिक स्वास्थ्य एवं फिटनेस हेतु एक वृहत दृष्टिकोण प्रदान करता है। योगासनों के नियमित अभ्यास से युवाओं के शरीर में लचीलापन आता है। आज के युग में युवाओं हेतु योग निम्न प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रहा है –

आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण का सामना करने हेतु युवाओं को मानसिक तौर पर तैयार करने में – योगाभ्यास से मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे युवाओं में आत्म-जागरूकता बढ़ती है। इससे युवाओं में भावनात्मक लचीलापन पैदा होता है जो उन्हें तनाव, चिंता और अवसाद के प्रबंधन में सहायता करता है परिणामस्वरूप युवा बेहतर एकाग्रता के साथ आधुनिक जीवन के दवाबों का सामना अधिक क्षमता के साथ करते हैं।

सकारात्मक आत्म छवि का विकास : योगाभ्यास को नियमित दिनचर्या में शामिल करने के उपरांत युवाओं में उपलब्धि की भावना का विकास होता है। योग के द्वारा आत्म चिंतन और आत्म निरीक्षण से युवाओं को उनकी क्षमता की समझ होती है जिससे वे आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं।

आत्म जागरूकता के साथ तनाव मुक्त जिंदगी जीवन हेतु – योगाभ्यास शारीरिक पहलुओं के अतिरिक्त हमारी निजी जिंदगी एवं बाह्य कारकों से उत्पन्न तनावों को भी नियंत्रित करने में युवा वर्ग की सहायता कर रहा है। योग क्रिया में सांस रोकने पर युवा अपनी आतंरिक ध्वनि को पहचानता है एवं जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने शरीर की भावनाओं के बारे में जागरूकता विकसित होती है। इससे उन्हें विश्राम, शांति की अनुभूति होती है जो तनाव को नियंत्रित करने में व्यापक स्तर पर कारगर सिद्ध होती है।

युवाओं में सामाजिक सद्भाव एवं जुडाव का विकास :- आज के दौर में सोशल मीडिया के अति तीव्र प्रसार से युवा भौतिक दुनिया से अलग मोबाइल फ़ोन और कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के माध्यम से अपने आप को एक कमरे के भीतर वर्चुअल संसार में कैद कर रखा है। इससे युवा वर्ग के बीच सामाजिक संबंधों का ह्रास हुआ है, लेकिन योग सामूहिक कक्षाओं एवं सामूहिक आयोजनों के माध्यम से सामाजिक सद्भाव एवं सामाजिक जुडाव में युवाओं की सहायता कर रहा है। भारत सरकार के प्रयास से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन वर्ष 2015 से लगातार होता आ रहा है इसमें विश्व के कई देश अपने देश या सामूहिक मंचों पर भी योग अभ्यास करते हैं चूँकि विश्व में कई पंथ, संप्रदाय एवं धर्म के लोग रहते हैं जो एक साथ योग करके सामाजिक एकता, सद्भाव एवं जुड़ाव का संदेश भी देते हैं।

योगाभ्यास के माध्यम से रचनात्मकता का विकास : योग की मुद्राओं के माध्यम से युवा बाहरी दुनिया के भटकाव तथा मानसिक कुतर्कों को त्याग कर वर्तमान में ध्यान केन्द्रित

करते हैं । ध्यान केन्द्रित करने के अभ्यास से मनुष्य में रचनात्मकता का उद्भव एवं प्रसार होता है जिससे युवा वर्ग अपने आस-पास के परिवेश हेतु पुरातन प्रथाओं से अलग सोच के साथ सामाजिक हित हेतु समस्याओं के समाधान हेतु नए प्रयोग करता है।

योगाभ्यास के माध्यम से एकाग्रता में वृद्धि : आज के दौर में जहाँ युवा अपनी जॉब की प्रकृति एवं सामाजिक दवाब के कारण अत्यधिक तनावयुक्त माहौल में एकाग्रता को पाने में असमर्थ है। योग की विभिन्न कलाओं के माध्यम से अपने मानसिक संतुलन को सुदृढ़ करता है जिससे वह अपने जीवन एवं कार्यस्थल पर एकाग्रता को बनाये रखता है।

युवा वर्ग में भावनात्मक विकास एवं तनाव प्रबंधन : युवावर्ग आज के प्रतिस्पर्धी सामाजिक युग में कम उम्र में ही बेहतर करियर के प्रयास में माता-पिता और समाज से शैक्षणिक दवाब के दौर से गुजर रहा ह। आए दिन समाचार पत्रों में कोटा शहर में अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा पाठ्यक्रम हेतु तैयारी कर रहे छात्रों की आत्महत्या की खबरें आती है। कुछ ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ विभिन्न राज्यों के 10वीं के परिणाम घोषित होने के बाद भी आती हैं जहाँ अनुतीर्ण छात्र आत्महत्या कर लेते हैं, इन सभी घटनाओं हेतु समाज में बेहतर करियर की चाह हेतु व्याप्त शैक्षिणिक दबाव है। योगाभ्यास इन तनावों और दवाबों को दूर करने हेतु मनुष्य को भावनात्मक लचीलापन प्रदान करता है। प्राणायाम जैसे योगाभ्यास से तंत्रिका तंत्र को विनियमित किया जा सकता है जिससे तनाव कम करने में मदद मिलती है। नित्य योग क्रियाओं के द्वारा तनाव का सामना करने हेतु युवा वर्ग मानसिक रूप से सशक्त होता है। मानसिक रूप से सशक्त होने के बाद युवा वर्ग में भावनाओं के लचीलापन का प्रसार होता है जिससे वह जिंदगी के प्रतिकूल परिस्थितियों में ही गलत कदम नहीं उठाता है।

व्यक्तित्व का विकास :- नियमित योगाभ्यास के माध्यम से युवा वर्ग अपनी आतंरिक क्षमता का मूल्यांकन करता है तथा अपनी मजबूती एवं कमजोरी का विश्लेषण करता है। योग उन्हें अपनी मजबूती का सहारा ले कर अपनी पिछली असफलताओं से सीखते हुए करियर की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रेरित करता है। इन सब चरणों का पालन करके युवा वर्ग अपने व्यक्तित्व का विकास करता है।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि आज के दौर में योग का युवा वर्ग पर व्यापक प्रभाव है जो युवाओं को शारीरिक फिटनेस के साथ मानसिक स्वास्थ्य, आत्म सम्मान तथा तनाव प्रबंधन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। योगाभ्यास को अपनाकर युवा अपने भावनाओं को लचीलापन प्रदान कर सकते हैं

जो उनके समग्र स्वास्थ्य की वृद्धि में सहायक होता है। योग के माध्यम से युवा अपने आत्म अन्वेषण और रचनात्मकता को नई दिशा और गति प्रदान कर सकते हैं। वर्तमान दौर में युवा वर्ग योग को माध्यम बना कर मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक मजबूती को प्राप्त करके अपने समक्ष प्रस्तुत समस्याओं और चुनौतियों पर काबू पा सकता है।

कुमार अग्निवेश
कनिष्ठ अनुवादक
लेखापरीक्षा –II

एक जिम्मेदार बेटा

" हम हर किसी का घाव भरते है पर हमारा कोई मरहम नहीं होता है, अजी कौन कहता है, जनाब हम लड़कों की जिदंगी में कोई गम नहीं होता है"।

जब घर का बेटा सामान लादकर दूसरे देश कमाने जाता है तो सारे परिवार का सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है लेकिन गाड़ी में बैठने से ठीक पहले जब वह पूरे परिवार की ओर नजरें दौड़ाता है तो इतनी सारी आँखें एक साथ नम देखकर उसका दिल भर जाता है। पिता कुछ बीमार रहते है, मालूम है उसे वो अपनी जरूरतों के सामने इन जिम्मेदारियों को बेबस पाता है।

माँ से नहीं होते अब घर के सारे काम वो माँ के कंधे पर अपनी पकड़ मजबूत करके उसे अपनी मजबूरियों का एहसास दिलाता है। जैसे ही गाडी बढ़ती है नुक्कड़ से कुछ आगे एक सन्नाटा-सा दिल में पसर जाता है और मैं फिर आऊँगा कहकर वो हवा में हाथ हिलाता है।

लेकिन ठीक उस वक्त उसकी आँखों से एक आँसू गिरकर उसके होठों पर दम तोड़ देता है और कौन कहता है केवल बेटियाँ होती है विदा, बेटे को भी एक ही दहलीज से नम आँखों के साथ ना जाने कितनी बार विदा किया जाता है।

सुश्री अर्चना प्रजापति
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा *–II*

करने से पहले

आँसू न बहाना गम में डूब जाने से पहले।

नशे में आना मय कंठ में उतर जाने से पहले।

यूं टकरा न जाना मुलाकात से पहले

समझ न जाना समझाने से पहले

नफरत न करना प्रेम करने से पहले

हक न जताना अपनाने के पहले

बार-बार न मनाना मान जाने के बाद ॥

अविश्वास न करना भरोसा करने से पहले

इश्क न करना मन में उतर जाने से पहले

खफ़ा ना होना कारण जानने के पहले

मान न जाना मनाने से पहले

साथ न निभाना साथी बनाने से पहले

पछताना नहीं मौका गंवाने से पहले

खुशी न जताना हासिल करने से पहले

पर याद जरूर करना मेरे गुजर जाने के बाद ॥

रेजीना जॉर्ज

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (के.)

धर्मस्थल (आस्था या पिकनिक स्थल)

आजकल लोग धर्मस्थल पर आस्था कम और ब्लॉग वीडियो और रील्स बनाने के लिए ज्यादा जा रहे है। अभी हाल ही में उत्तराखंड की चार धाम यात्रा शुरू हुई। बहुत से लोगों का लाखों की संख्या में वहाँ पहुँचना एक अच्छी पहल है। लोगों को भगवान के दर्शन में उतनी रूचि नहीं है जितनी सोशल मीडिया में अपनी आधी-अधूरी जानकारी अपडेट करने की रहती है। लोगों की इतनी भयानक भीड़ के कारण प्रशासन व अन्य लोग भी बहुत सारी कठिनाइयों का सामना कर रहे है। प्रशासन भी उन्हें उचित संसाधन उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। कई लोग सोशल मीडिया पर कुछ नया अपडेट डालने के लिए दुर्गम से दुर्गम स्थान पर भी जाने से नहीं हिचकिचाते हैं। इन्हीं कारणों से भगदड़ जैसी स्थिति पैदा होने पर उन्हें अपनी जान तक गंवानी पड़ती है। वे नहीं जानते है कि उनकी जान उनके परिवार वालो के लिए कितना अहमियत रखती है। ऐसे लोग सिर्फ दिखावटी दुनिया में जीना चाहते है यदि कोई सड़क किनारे पड़े हुए पत्थर पर भी फूलमाला चढ़ाने लगें तो लोगों का जमावड़ा

वहाँ भी पहुँच जाने में देरी नहीं करता हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि धर्मस्थल पर लोग दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने और समय बिताने जाते हैं न कि भगवान का दर्शन करने। बहुत लोगों को तो यह भी नहीं पता होता है कि वे किस देवता के दर्शन करने आए हैं। धर्मस्थल पर गलत आचरण करना, माँस मदिरा का सेवन करना गलत है जिससे वे भगवान की आस्था को चोट पहुँचाते है। भगवान की आस्था को आहत करने के कारण ही 16 जून 2013 को केदारनाथ में भचानक बाढ़ आई थी और लाखों लोगों ने अपनी जान गवाई थी। भगवान के धर्मस्थानों में यदि प्रशासन मोबाइल फोन, कैमरा एवं अन्य इलैक्ट्रोनिक उपकरणों को साथ लाने पर प्रतिबंध कर दे तो लोगों की संख्या खुद ही खुद कम हो जाएगी और सिर्फ सच्चे भक्त ही दर्शन को पहुँचेगें। प्रशासन भी इस भीड़ भरी जनता के लिए समुचित व्यवस्था उपलब्ध कर पाएगा। मेरी तो सभी लोगों से यह विनती है कि धर्मस्थल को धर्मस्थल ही बने रहने दें उसे पिकनिक स्थल के रूप में प्रयोग करना बंद करें।

साधना सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा –I

किताबों से इश्क

इश्क किताबों से हुआ तो दुनिया समझ में आई,

किताबों ने भी मोहब्बत पुरजोर निभाई !!

कई अनसुलझे सवालों की गुत्थी सुलझाई !

कई अनछुए पहलुओं की भी तस्वीर दिखाई !!

इसके चक्कर में हमें कितनी ही रात नींद ना आई,

इसने दोस्ती ही इतनी शिद्दत से निभाई !!

जब भी मन परेशान हुआ या समस्या आई,

इसने कहा जनाब आइए और समाधान की परत खुली !!

चाहे मन उदास हो या हो मन प्रसन्न,

इसके पास हैं, हर चीज से जुड़ा एक प्रसंग !!

चाहे दोस्त को हो मनाना या हो दुश्मन के पास जाना,

इसके पास है, हर प्रकार की तरकीबों का खजाना !!

चाहे हो जानकारी को जुटाना,

या हो ज्ञान को बढ़ाना !!

या फिर बैठे-बैठे हो कहीं घूम कर आना,

इन सभी चीजों का यही है असली ठिकाना !!

दोस्त कहते हैं यह क्या है बहाना- क्यों तुम्हें नहीं वहाँ जाना?

हम कहते हैं भाड़ में जाए जमाना, हमें इस पुस्तक के अंत तक है आना !!

दोस्त पूछते हैं किताबों से "क्या होगा फायदा"?

क्या इससे हमारे पैसे बढ़ जाएंगे बाकायदा?

मैं कहता हूँ छोड़ो इस नफे नुकसान का वायदा,

यकीन मानो जिंदगी में लुत्फ आने लगेगा ज्यादा !!

मयंक कुमार मयंक
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा- I

विभिन्न गतिविधियाँ 2023-24

भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी।

वर्ष 2023-24 के लिए नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता में श्री हेनरी एडविन ने भाग लिया और पश्चिमी वाद्ययंत्र-वाद्य सैक्सोफोन में द्वितीय पुरस्कार (रजत) प्राप्त किया।

सीनियर स्टेट हॉकी कर्नाटक लीग में सिल्वर मेडल प्राप्त।

साउथ जोन फुटबाल टूनामेंट में भाग लेते भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में प्रथम पुरस्कार विजेता का पोस्टर।

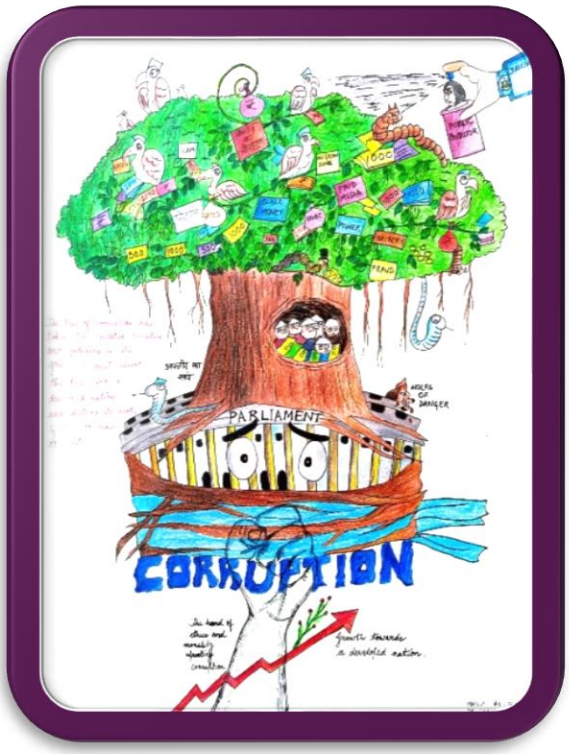

कर्नाटक राज्य पुरस्कार विजेता-

श्री वेंकटेश प्रसाद, कर्नाटक ओलंपिक संघ पुरस्कार 2023 विजेता को दिसंबर 2023 में कर्नाटक के राज्यपाल द्वारा बैडमिंटन क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया था।

उप महालेखाकार (प्रशासन) सेवानिवृत्त कर्मचारी को सम्मानित करते हुए।

कार्यालय के कार्मिकों द्वारा गरीब बच्चों के लिए कपड़ों एवं खिलौनों का वितरण।

संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार

संयुक्त परिवार एक परंपरागत पारिवारिक प्रणाली है जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक ही आवास में रहते हैं और साझे अनुभव, संपत्ति और जिम्मेदारियों को बांटते हैं। यह प्रणाली अक्सर परंपरागत भारतीय समाज में देखी जाती है जहाँ परिवार के वृद्ध सदस्यों का महत्वाकांक्षी योगदान होता है और सामाजिक योगदान भी होता है। इसमें कई पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती हैं। सभी परिवार के सदस्य एक ही संपत्ति और खान-पान को साझा करते हैं। इसमें वयस्क व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और परिवार के निर्णयों में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है।

एकल परिवार एक पारिवारिक प्रणाली है जिसमें एक ही पीढ़ी के सदस्य एक ही आवास में रहते हैं। इस प्रणाली में पति-पत्नी और उनके बच्चे होते हैं, वे अपनी आधिकारिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को स्वतंत्रता से निभाते हैं। इसमें एक ही पीढ़ी के सदस्य होते हैं जो एक ही आवास में रहते हैं। परिवार के सदस्य स्वतंत्रता और निर्णय लेने में स्वतंत्र होते हैं। आर्थिक रूप से भी एकल परिवार अधिक स्वतंत्र और नियंत्रण रखता है।

संयुक्त परिवार और एकल परिवार दोनों की अपनी अच्छाइयाँ हैं, जो आपके पारिवारिक और सामाजिक मान्यताओं पर निर्भर करती है। यहाँ पर संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार के कुछ विचारणीय बिंदु हैं:

संयुक्त परिवार के लाभ:

साझी जिम्मेदारियाँ: सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हैं और साझा जिम्मेदारियों को संभालते हैं, जो आर्थिक रूप से भी साझा कोष और समर्थन प्रदान कर सकता है। संयुक्त परिवार में घरेलू काम, बच्चों की देखभाल और वित्तीय प्रबंधन जैसी जिम्मेदारियाँ परिवार के सदस्यों के बीच साझा की जाती हैं। उदाहरण के लिए बड़े सदस्य वित्तीय योजना की देखरेख कर सकते हैं जबकि युवा सदस्य दैनिक घरेलू कार्यों में योगदान दे सकते हैं।

समर्थन प्रणाली: संयुक्त परिवार में परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे का साथ देते हैं और जरूरत या संकट के दौरान मजबूत समर्थन प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई बीमार पड़ जाए या वित्तीय समस्या का सामना करें तो कई परिवार के सदस्य भावनात्मक, शारीरिक और वित्तीय समर्थन प्रदान कर सकते हैं। इससे व्यक्ति को अकेलेपन की भावना कम महसूस होती है।

सांस्कृतिक संरक्षण: संयुक्त परिवार अक्सर पीढ़ी दर पीढ़ी तक सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करने में मदद करते हैं। संयुक्त परिवार में पारिवारिक एकता बढ़ती है और परंपरागत संस्कारों और मानवीय मूल्यों की रक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए त्योहार और धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं जिससे सांस्कृतिक प्रथाओं को युवा सदस्यों तक पहुँचाया जा सकता है।

आर्थिक लाभ: संयुक्त परिवार में वित्तीय संसाधनों का आर्थिक लाभ देने में सक्षम होता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त परिवार व्यक्तिगत परिवारों के लिए व्यक्तिगत रूप से संभव नहीं होने वाली बड़ी संपत्तियों या निवेशों को संयुक्त रूप से संभाल सकते हैं।

सामाजिक सुरक्षा: संयुक्त परिवार सदस्यों को एक सुरक्षा और आत्मीयता की भावना प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए बुजुर्ग परिवार के सदस्य युवा सदस्यों की देखभाल और साथ प्राप्त करते हैं जिससे अकेलापन और अलगाव की भावना कम होती है।

संघर्ष समाधान: संयुक्त परिवार सदस्यों के बीच संघर्ष समाधान और समझौते के कौशल को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, नियमित संवाद और चर्चाओं से भ्रम को दूर करने और समरसता बनाए रखने में मदद मिलती है।

ये उदाहरण संयुक्त परिवार के विभिन्न लाभों को दर्शाते हैं जिनमें आर्थिक लाभ, भावनात्मक समर्थन और सांस्कृतिक संरक्षण शामिल हैं।

एकल परिवार के निम्नलिखित लाभ हैं:

स्वतंत्रता: एकल परिवार में परिवार के सदस्य अपनी स्वतंत्र जीवनशैली जी सकते हैं। एकल परिवार में सदस्यों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निर्णय लेने की अधिकता होती है। उदाहरण के लिए, पति-पत्नी अपनी निर्धारित अनुसूचियों के अनुसार अपने काम और व्यक्तिगत रूचि को पूरा कर सकते हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता और अधिकार: एकल परिवार में वित्तीय और प्रशासनिक निर्णय अधिकार एक ही या दो सदस्यों के पास होते हैं। एकल परिवार आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है क्योंकि सभी जिम्मेदारियां एक ही पारिवारिक आय के आधार पर संभाली जाती हैं। उदाहरण के लिए पति और पत्नी अपने वित्तीय योजनाओं और निवेशों को स्वतंत्र रूप से निर्णय कर सकते हैं।

अधिक व्यक्तिगत ध्यान: एकल परिवार में बच्चों को अधिक व्यक्तिगत ध्यान मिलता है। उदाहरण के लिए, माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल को अपने व्यस्त जीवन में सम्मिलित कर सकते हैं।

संवाद और समरसता: एकल परिवार अक्सर तंगी के कारण ज्यादा संवाद और समरसता बनाए रखता है। उदाहरण के लिए जब पति-पत्नी और उनके बच्चे एक छोटे परिवार में रहते हैं तो उनके बीच का संवाद और सहयोग प्रोत्साहित होता है।

समय और संगठन: एकल परिवार अक्सर समय और संगठन में अधिक सुचारू रहता है। उदाहरण के लिए काम के प्रति अधिक समर्पण और परिवार की गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से संचालन की संभावना होती है।

अनुकूलन: इस प्रकार की पारिवारिक प्रणाली अनुकूलन में आसानी प्रदान कर सकती है क्योंकि वे केवल एक ही पीढ़ी के सदस्य होते हैं।

ये उदाहरण दिखाते हैं कि एकल परिवार के विभिन्न लाभ क्या हो सकते हैं जिनमें स्वतंत्रता, व्यक्तिगत ध्यान, और संवाद शामिल हैं।

यहाँ संयुक्त और एकल परिवार के नुकसानों के बारे में विस्तार से बताया जा रहा है:

संयुक्त परिवार के नुकसान:

स्वतंत्रता की कमी: संयुक्त परिवार में अक्सर व्यक्तिगत स्वतंत्रता कम होती है क्योंकि सभी सदस्यों के बीच निर्णय साझा करने की आवश्यकता होती है।

अनुकूलन की समस्याएँ: अनुकूलन और असमंजस के कारण इस प्रकार के परिवार में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

विभिन्नता की अवधि: विभिन्न पीढ़ियों के बीच विचारों और जीवनचर्या में अंतर हो सकता है जो कभी-कभी समस्याओं का कारण बन सकता है।

एकल परिवार के नुकसान:

अकेलापन की भावना: बच्चे अकेले परिवार में अकेलापन की भावना महसूस कर सकते हैं और यह सामाजिक और मानसिक दिक्कत का कारण बना सकता है।

आर्थिक दबाव: एकल अर्थव्यवस्था में आर्थिक दबाव हो सकता है क्योंकि सभी जिम्मेदारियाँ एक ही व्यक्ति या एक ही इकाई पारिवारिक आय की आश्रित होती हैं।

भारतीय समाज में एकल और संयुक्त परिवार का प्रभाव

भारत में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवारों का चलन रहा है जहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं। हालाँकि हाल के वर्षों में विशेष रूप से शहरों में, एकल परिवारों (माता-पिता और बच्चे) का चलन बढ़ रहा है। आइए देखें कि यह शहरी और ग्रामीण जीवन दोनों को कैसे प्रभावित करता है:

शहरों में एकल परिवार:

फायदे: स्वतंत्रता और गोपनीयता अधिक होती है। दंपत्ति अपने बच्चों की परवरिश अपने हिसाब से कर सकते हैं।

नुकसान: सामाजिक सहायता प्रणाली कमजोर होती है। बुजुर्गों की देखभाल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। त्योहारों और खुशियों को बाँटने वाले कम लोग होते हैं।

शहरों में संयुक्त परिवार:

फायदे: बच्चों की परवरिश में दादा-दादी, नाना-नानी का सहयोग मिलता है। सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा की भावना मजबूत होती है।

नुकसान: व्यक्तिगत स्वतंत्रता कम हो सकती है। हर किसी की राय लेने में समय लग सकता है।

गाँवों में एकल परिवार:

फायदे: पारंपरिक दबाव कम होता है। खेती या पारिवारिक व्यवसाय में आधुनिक तरीके अपनाने में आसानी होती है।

नुकसान: कृषि कार्यों में अतिरिक्त मदद का अभाव रहता है। बुजुर्गों की देखभाल करने में मुश्किल हो सकती है।

गाँवों में संयुक्त परिवार:

फायदे: कृषि कार्यों में मदद मिलती है। पारंपरिक ज्ञान और कौशल का हस्तांतरण होता है। सामाजिक समारोहों को मनाने में सामूहिकता रहती है।

नुकसान: आधुनिक खेती के तरीकों को अपनाने में विरोध हो सकता है। संसाधनों के बँटवारे को लेकर विवाद हो सकते हैं।

इन्हीं कारणों से, संयुक्त और एकल परिवार दोनों की अपनी अच्छाइयाँ हैं। संयुक्त परिवार में सभी सदस्य एक-दूसरे का साथ देते हैं और साझी जिम्मेदारियाँ संभालते हैं। इससे परिवार में समृद्धता और संबंध मजबूत होते हैं। संयुक्त परिवार में पारिवारिक एकता बढ़ती है और समाज में फैली बुराइयों का समाधान करने में मदद मिलती है। बड़े लोगों का अनुभव और मार्गदर्शन युवा पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण होता है और इससे उनकी स्थिति में सुधार होती है।

इन सभी कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार, एकल परिवार से बेहतर है।

ओम कुमार अड़लक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा-II

सच्चा मित्र

लता एवं प्रभा बचपन से ही पक्की सहेलियाँ है। लता के पिताजी गाँव के सरपंच है। उनकी गाँव के बीचों-बीच आलीशान कोठी है जिसमें लता अपने माँ, पिताजी, बड़ा भाई-भाभी, दादा-दादी, चाचा-चाची एवं उनके दो बच्चों के साथ रहती है। प्रभा के पिताजी सरपंच की कोठी पर चौकीदारी के साथ-साथ सरपंच के रोजमर्रा के छोटे-मोटे कार्य करते हैं और उसकी माँ गाँव के लोगों के कपड़े सिल कर प्रभा के पिताजी का घर चलाने में हाथ बंटाती है। प्रभा ईंटों से बने दो कमरे के मकान में अपनी माँ, पिताजी, छोटे भाई एवं बूढ़ी दादी के साथ रहती है। लता और प्रभा एक ही विद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ती हैं। दोनों ही पढ़ाई में होशियार है और बचपन से सबको यही संशय रहता था कि कक्षा परिणाम में दोनों मे से कौन टॉप करेगा। दोनों ने अभी

बारहवीं की बोर्ड परीक्षा दी थी और ग्रीष्मकाल अवकाश का आनंद लेते हुए परीक्षा परिणाम का इंतजार कर रहीं थी। आखिर परिणाम का दिन आ गया जिसमें लता 96% अंकों के साथ प्रथम जिला टॉपर और प्रभा 94% अंकों के साथ द्वितीय जिला टॉपर थी। दोनों परिवारों में उत्सव जैसा माहौल था। लता के जमींदार पिताजी ने पूरे गाँव को भोज करवाया। प्रभा के परिवार ने अपनी हैसियत के अनुसार मीठा बनाकर आस-पड़ोस में बंटवाया। इन सबके बीच लता और प्रभा अलग ही चिंता में घुली जा रही थी। गाँव में केवल बारहवीं तक का ही विद्यालय था और उससे आगे की पढ़ाई करने हेतु गाँव से 20 किमी दूर कन्या महाविद्यालय था। उन दोनों को यही चिंता सताये जा रही थी कि दोनों के परिवार उन्हें आगे पढ़ने की इजाजत देंगे या नहीं। प्रभा ने लता को बोला कि तुम्हारे तो बड़े भाई प्रतिदिन व्यापार हेतु मोटर से शहर जाते हैं तो तुम उनके साथ महाविद्यालय जा सकती हो परंतु मेरे पास कोई साधन नहीं है, गाँव से चलने वाले टैम्पो भी दो बार बदलने पड़ते है और मेरे पिताजी इतनी दूर कभी अकेले यात्रा नहीं करने देंगे तो शायद मैं जीवन में कभी भी आगे की पढाई नहीं कर पाऊँगी।

तब लता बोली कि पगली अगर मेरे पिताजी बड़े भैया के साथ मुझे महाविद्यालय भेजने को तैयार हो जाते हैं तो मैं तेरे बिना भला कैसे जाऊँगी। हम दोनों साथ महाविद्यालय जाकर अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करेंगे। यह बात सुन प्रभा को थोड़ी तसल्ली हुई। लेकिन शायद नियति को कुछ और ही मंजूर था इसलिए आगे की पढ़ाई सुनकर लता के जमींदार पिताजी ने कड़क शब्दों में उसे मना कर दिया और आदेश दिया कि एक वर्ष में घर-गृहस्थी के सारे कार्य सीखकर कुशल गृहिणी के सारे गुण ग्रहण करो और उसके पश्चात किसी अच्छे घर में ब्याह संपन्न कर देंगे। लता को यह बात सुनकर गहरा धक्का लगा और वो एकदम मायूस हो गई। इधर आशा के विपरीत प्रभा के पिताजी चाहते थे कि प्रभा आगे की पढ़ाई पूरी कर अपने पैरों पर खड़ी हो जाए तभी विवाह के बारे में सोचेंगे। इसलिए प्रभा के पिताजी सरपंच के पास गए और विनती करते हुए कहा कि दोनों सहेलियाँ लता बिटिया के बड़े भाई के साथ प्रतिदिन महाविद्यालय जाकर शाम को गाँव लौट आएगीं। इस प्रकार दोनों की आगे की पढ़ाई पूरी हो जाएगी। यह बात सुनकर सरपंच की आँखें गुस्से से लाल हो गई, उन्हें लगा ये बाप-बेटी ही उसकी बेटी को आगे की पढ़ाई के लिए उकसा रहे है। उन्होंने डांट कर प्रभा के पिताजी को नौकरी से निकाल कर घर से धक्के मार कर निकाल दिया। उस रात लता और प्रभा दोनों बहुत रोई। परंतु प्रभा के पिताजी ने इरादा पक्का कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो प्रभा की पढ़ाई में बाधा नहीं आने देगे। प्रभा ने भी अपने पैरों पर खड़े होने का पक्का इरादा कर लिया था। प्रभा रोज 5 किमी साइकिल चलाकर ऑटो स्टैंड तक जाती

और वहाँ से ऑटो पकड़ कर कॉलेज पहुँचती। कॉलेज पढ़ाई के साथ-साथ उसने राज्य सिविल सेवा की तैयारी शुरू कर दी। कॉलेज खत्म होते ही पहली बार में राज्य सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण कर वह अपने क्षेत्र की तहसीलदार बन गई। उधर लता का भी शहर के नामी वकील से विवाह संपन्न हो गया था। लता के गाँव आने की खबर सुनकर प्रभा खुश होकर उससे मिलने पहुँची तो देखा कि लता का चेहरा पीला पड़ गया था और वो एकदम मुरझाई सी थी। प्रभा उसका ऐसा रूप देखकर एकदम हैरान हो गई। प्रभा के बहुत जोर देने पर लता ने बताया कि ससुराल तो बहुत संपन्न है, धन- दौलत की कोई कमी नहीं है परंतु वे काफी आधुनिक विचारों वाले हैं इसलिए मेरे पति की नजर में मेरी कोई इज्जत नहीं है। मेरे कम पढ़े-लिखे होने की वजह से मेरे पति घरेलू कार्यों के अलावा बात करना पसंद नहीं करते। ननद भी मुझे छोटी-छोटी बातों पर उलाहना देती है क्योंकि वो भी सरकारी विद्यालय में अध्यापिका है। मैं ससुराल में जाकर बिल्कुल अकेली हो गई हूँ। प्रभा यह सब बातें सुनकर धक से रह गई। उसने लता की मदद करने की ठानी। उसने लता को ओपन स्कूल से पढ़ने की सलाह दी और हरसंभव मदद का आश्वासन दिया।

अब जब भी लता अपने मायके आती तो प्रभा उसे अच्छे से पढ़ाती, नोट्स बनवाने में मदद करती और उसके असाइंटमेंट खुद जमा करवाने जाती। यह सब कार्य दोनों सहेलियों ने इतने गुप्त तरीके से किया कि तीन साल तक किसी को भी कानों-कान खबर नहीं हुई। एक दिन लता के ससुर ने अखबार पढ़ते हुए देखा कि लता की तस्वीर छपी हुई है, यह देखकर उन्होंने पूरी खबर पढ़ी और सबको सुनाई कि लता ने कॉलेज में टॉप किया है। किसी को कानों पर विश्वास नहीं हुआ और दूसरी ओर प्रभा मिठाई का डब्बा लेकर लता के घर आई और उसे गले से लगा लिया। फिर लता ने सबको बताया कि कैसे उसने प्रभा की मदद से उच्च शिक्षा पूरी की है। उसके पति को भी नहीं पता था कि वह पढ़ने में कितनी होशियार थी परंतु अपने पिताजी की वजह से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी। उसके पति ने अपने व्यवहार के लिए लता से माफी मांगी और प्रभा का आभार व्यक्त किया। लता की आँखों में खुशी के आंसू भरकर प्रभा का आभार व्यक्त करके बोली सच्चा मित्र वही है जो मित्र की किसी भी जरूरत के समय उसकी सहायता करें। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि मुझे तुम जैसे सच्ची दोस्त मिली।

सोनाक्षी सक्सेना
कनिष्ठ अनुवादक
लेखापरीक्षा-I

क्या लिखूँ.....?

लिखने को बहुत कुछ है दिल में, पर किससे मैं शुरुआत लिखूँ ?

एक स्वर्णिम इतिहास लिखूँ या, दिल पर पड़ा आघात लिखूँ।

ऋगवेद की ऋचा या फिर, मैं सामवेद का गान लिखूँ !

यजुर्वेद का कर्म या फिर, मैं आयुर्वेद महान लिखूँ।

ऋषि मुनियों का त्याग लिखूँ, या रामराज्य बड़ भाग लिखूँ !

लाक्षागृह की बात लिखूँ, या महाभारत का सौगात लिखूँ।

राम कृष्ण और बुद्ध जैन के, कथनों का सम्मान लिखूँ !

या फिर शांत बुद्ध की खंडित प्रतिमा, का साक्षी बामियान लिखूँ।

मौर्यवंश में होने वाले, भारत का उत्थान लिखूँ या

फिर अशोक के शस्त्र त्याग का, छंदों में जयगान लिखूँ।

अहिंसा के कारण, इस जगत को हुआ ये भान लिखूँ या

फिर भारत अब भी क्लीवों का, वीर-रहित जड़-मान लिखूँ।

मुगलों का अत्याचार लिखूँ, या गद्दारों का वार लिखूँ !

या इन सब से ऊपर उठकर, मैं जय शहीद हर बार लिखूँ।

वीर कुँवर अशफाक भगत की, अद्भुत **"अमित"** बलिदान लिखूँ

या झाँसी की रानी के लिए, वर्तमान पैगाम लिखूँ।

अमित मोहन झा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा -II

मताधिकार

मताधिकार नहीं छोड़ना अपने कर्तव्य से मुख नहीं मोड़ना

अच्छे लोकतंत्र का मूलमंत्र यही बिना मत डाले घर नहीं आना

प्रतिनिधि चुनने का आया त्योहार वोट हमारे भविष्य का आधार

इधर-उधर की बातों में न पड़ना अपने मन की बात को सुनना

सबसे पहले देश का संविधान उस पर कभी आँच न आने देना

जो समाज की सेवा करे उसको प्रतिनिधि चुनना

जात-पात से ऊपर उठकर नए भारत का संकल्प लेने की आई बारी

चलो हम अपना भविष्य संवारे देकर मतदान पूरी करे जिम्मेदारी

देश की अखण्डता और एकता मतदान से आती एकरुपता

सुनहरे भविष्य की संकल्पना मतदान से पूरी होगी परिकल्पना

संजीव चन्द्र पाठक

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा -II

आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

वर्तमान समय में **कृत्रिम बुद्धिमत्ता** (एआई) एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन, बैंकिंग प्रणाली आदि मानव जीवन के लगभग हर पहलू में इसका उपयोग हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता मशीनों द्वारा मानव बुद्धिमत्ता प्रक्रियाओं का अनुकरण है। इन प्रक्रियाओं में सीखना, तार्किक क्षमता तथा स्वतः सुधार जैसी प्रक्रिया सम्मिलित होती हैं। दूसरे शब्दों में कृत्रिम बुद्धिमता सीखने, सोचने, समस्या का समाधान तथा निर्णय लेने के मशीनों की क्षमता को संदर्भित करता है। उदाहरण के रूप में आज के दौर में टैक्सी सेवा प्रदाता कंपनियां जैसे रैपिडो, ओला एवं उबर इत्यादि यहाँ बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के हमें टैक्सी सेवा प्रदान कर देती हैं तथा हमारा किराया भी तय करती हैं यह कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा ही संभव हो पा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता का दूसरा उदाहरण

है गूगल मैप। यहाँ भी बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के हमें बेहतर मार्ग, कम दूरी वाला मार्ग, अन्य वैकल्पिक मार्ग सुझाता है।

कृत्रिम बुद्धिमता के कार्यान्वयन में कई घटक विषय हैं जिसमें कंप्यूटर विज्ञान, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, गणित तथा अभियांत्रिकी जैसे विषय शामिल हैं।

<u>कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हम निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं-</u>

कमजोर कृत्रिम बुद्धिमत्ता- यह कृत्रिम बुद्धिमता का वैसा प्रकार है जहाँ मशीने पूर्णतः मानवीय क्षमता के समान कार्य करने में सक्षम नहीं होती अर्थात् बीच-बीच में उनको मानवीय हस्तक्षेप की जरुरत होती है। उदाहरण- चैटबोट

मजबूत कृत्रिम बुद्धिमता – यह कृत्रिम बुद्धिमता का वैसा प्रकार है जहाँ मशीनें पूर्णतः बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के मानवीय क्षमता के समान कार्य करती है वर्तमान में इसका कोई उदाहरण नहीं है फिर भी वैज्ञनिकों द्वारा ऐसी मशीन विकसित करने के प्रयास जारी हैं।

संकीर्ण कृत्रिम बुद्धिमता – इसके तहत वैसी कृत्रिम बुद्धिमता को वर्णित किया जाता है जो एक कार्य या निर्धारित संख्या के कार्य को संपादित करता है।

सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता – इसके तहत वैसी कृत्रिम बुद्धिमता आती हैं जो एक व्यापक कार्य की श्रृंखला को पूर्ण करती हैं। मानव बुद्धिमता के काफी समीप है।

कृत्रिम बुद्धिमता के लाभ :

- कृत्रिम बुद्धिमता का लाभ एआई बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर, डेटा डिटेक्टिव आदि जैसी नौकरियों के सृजन से प्रदर्शित हो रहा हैं।

- कृत्रिम बुद्धिमता भारत एवं पूरे विश्व के लिए स्टार्ट अप सेक्टर की कंपनियों के लिए अवसरों का भंडार लेकर आई हैं।

मानव की भागीदारी ने जहाँ भारत के विभिन्न संगठनों, विभागों और कार्यालयों में पक्षपात, भाई-भतीजावाद एवं भ्रष्टाचार जैसे मामलों को जन्म दिया है लेकिन कृत्रिम बुद्धिमता काफी हद तक इनके

प्रभाव को कम करने में सहायता करती हैं क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमता की प्रक्रिया में मानवीय हस्तक्षेप कम होता है।

- सड़क हादसे में प्रत्येक साल लाखों लोगों की मौत होती है लेकिन गूगल के स्वचालित कार के प्रयोग द्वारा ऐसी घटनाओं में 90 से 95 % तक की कमी देखी गई है।

- कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा दोहराए जाने वाले कार्यों को समाप्त करके जैसे प्रस्तावित कार्य तथा बैठकों को निर्धारित करने की सुविधा भी लोगों को प्राप्त हुई है।

- कृत्रिम बुद्धिमता के प्रयोग से अनुसंधान के क्षेत्र में भी लाभ देखने को मिल रहें हैं जैसे कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा अब कैंसर का इलाज खोजने के लिए शोध किया जा रहा है।

महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग -

शिक्षा के क्षेत्र में– इस क्षेत्र में संवादात्मक कृत्रिम बुद्धिमता और चैटबोट आभासी ट्यूटर की तरह व्यक्ति की मदद करता है। कृत्रिम बुद्धिमता आधारित सॉफ्टवेर और एप्लीकेशन कई मायनों में हमारी परीक्षा प्रणाली को भी समृद्ध और कदाचार मुक्त बना रहे हैं क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमता प्रोगाम वेब कैमरा, वेब सर्च तथा माइक्रोफोन के माध्यम से व्यक्तियों पर नजर रखती हैं। यहाँ कोई भी अन्य अवांछित गतिविधियाँ होने पर यह तत्काल सिस्टम को संदेश प्रेषित करती हैं।

व्यवसाय के क्षेत्र में– व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक दोहराए जाने वाले कार्यों के लिए कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग किया जा रहा है, उदाहरणार्थ – ग्राहकों को तत्काल सहायता पहुँचाने के लिए कंपनियां अपने वेबसाइट पर ही चैटबोट का विकल्प उपलब्ध करा रही हैं। उदाहरणार्थ: आईआरसीटीसी के टिकट बुकिंग ऐप पर ग्राहकों की सुविधा हेतु एएसके दिशा चैटबोट का विकल्प उपलब्ध है।

बैंकिंग के क्षेत्र में– भारत के बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग ग्राहकों की सहायता, धोखाधड़ी को रोकने तथा एटीएम के प्रबंधन के लिए किया जाता है।

आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में– रोबोट तथा ड्रोन की मदद से आपदा में क्षतिग्रस्त क्षेत्रों तथा भवनों के बारे में सटीक जानकारी मिलती है जिससे बचाव कार्य में तेजी आती है तथा जान -माल के नुकसान को काफी हद तक सीमित किया जाता है।

शासन के क्षेत्र में– कृत्रिम बुद्धिमता का इस्तेमाल सरकार की विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन एवं निगरानी के लिए किया जा है जैसे स्वच्छ भारत अभियान के तहत शौचालय निर्माण कार्यक्रम में ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का विश्लेषण करके निगरानी की जा रही है।

कृषि के क्षेत्र में– भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा यहाँ कृषि क्षेत्र से सबसे ज्यादा आबादी जुड़ी है अतः कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग कृषि क्षेत्र में एक क्रांति के रूप में होगा जो भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा देगी। आज सेंसर तकनीक की मदद से किसान अपने पालतू पशुओं के स्वास्थ्य की निगरानी एवं भोजन -पानी की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित कर पा रहे है तथा इन चीजों की कमी की स्थिति में किसान को सेंसर से चेतावनी भी प्राप्त होती है। किसान आज ड्रोन की सहायता से अपने खेतों मे कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कर रहें है जो कृत्रिम बुद्धिमता के कारण ही संभव है।

कृत्रिम बुद्धिमता के समक्ष चुनौतियाँ :

बेरोजगारी में वृद्धि : आज भारतवर्ष में बेरोजगारी सबसे व्यापक समस्या है। ऐसी परिस्थिति में कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग जहाँ पर निर्णय लेने में मानवीय हस्तक्षेप को कम किया जाता है इसके परिणाम से बेरोजगारी में और वृद्धि होगी जो कि एक विकासशील देश के लिए आदर्श स्थिति को प्रदर्शित नहीं करती है।

साइबर सुरक्षा:- चूंकि कृत्रिम बुद्धिमता हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग होता है अतः कृत्रिम बुद्धिमता के प्रत्येक उपकरण में साइबर अपराधियों के हमले की संभावना व्याप्त रहती है।

निजता का हनन: - जहाँ कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा आदमी की प्रत्येक गतिविधियाँ सीसीटीवी में कैद होती हैं इससे व्यक्ति की निजता पर प्रश्न चिह्न खड़ा होता है। उदाहरणार्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दुर्भावना से किसी अन्य व्यक्ति की रिकॉर्डिंग को सोशल मीडिया पर व्यापक पैमाने पर दुष्प्रचारित कर सकता है। आजकल मशहूर हस्तियों के फोटो और आवाज की नकल करके कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक द्वारा छेड़छाड़ कर बड़े पैमाने पर सोशल मीडिया पर प्रचारित और प्रसारित किया जाता है जो उन मशहूर हस्तियों की निजता का हनन है।

निष्कर्ष :

इसमें कोई दो राय नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमता प्रौद्योगिकी की वजह से मानव जीवन में एक क्रांति आई है तथा इसके फलस्वरूप मानव जीवन सरल हुआ है तथा सामाजिक क्षेत्रों, तकनीकी क्षेत्रों में अभूतपूर्व सुधार हुआ है परंतु फिर भी कुछ चुनौतियों हैं –

जैसे कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक में मानव – मशीन की बातचीत हेतु तरीके बनाना।

कृत्रिम बुद्धिमता सिस्टम की सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

कृत्रिम बुद्धिमता के नैतिक, कानूनी और सामाजिक पहलुओं को समझाना और उन पर अमल करना।

अतः भारतीय दृष्टिकोण से भारत में कृत्रिम बुद्धिमता पर कार्य जारी है लेकिन लगातार परिवर्तित हो रहे प्रौद्योगिकी से अद्यतित रहने के लिए भारत को इस क्षेत्र में अनुसंधान विकास और सुरक्षा पर व्यय बढ़ाना होगा जिससे कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक का समुचित उपयोग किया जा सके ।

कुमार अग्निवेश
कनिष्ठ अनुवादक
लेखापरीक्षा -II

कार्यालय परिसर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम 2023-24

ओणम उत्सव

क्रिसमस का जश्न

दशहरा त्योहार के अवसर पर गोम्बे हब्बा (गुड्डे-गुड़िया) प्रदर्शित किए गए

गणेशोत्सव समारोह

अनुशासन का महत्व

हर किसी के जीवन में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण है। अनुशासन के बिना कोई सुखी जीवन नहीं जी

सकता है। अनुशासन वह सब कुछ है जो हम सही समय पर सही तरीके से करते हैं। यह हमें सही रास्ते पर ले जाता है। जीवन के सभी कार्यों में अनुशासन अत्यधिक मूल्यवान है। हमें हर समय इसका पालन करना चाहिए चाहे वह स्कूल, घर, कार्यालय, संस्थान, फैक्टरी, खेल का मैदान, युद्ध का मैदान या दूसरी जगह हो।

ये खुशहाल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की सबसे बड़ी जरुरत है। आज के आधुनिक समय में अनुशासन बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इस व्यस्तता भरे समय में यदि हम अनुशासन युक्त दिनचर्या का पालन न करें तो हमारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है– अनु और शासन। अनु का अर्थ है पालन और शासन का मतलब नियम। हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो समाज में रहता है और उसमें रहने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। अनुशासन हमारी सफलता की सीढ़ी है जिसके सहारे हम कोई भी मंजिल हासिल कर सकते हैं।

अनुशासन दो प्रकार का होता है – एक वह जो हमें बाहरी समाज से मिलता है और दूसरा वह जो हमारे अंदर खुद से उत्पन्न होता है। हालाँकि कई बार हमें किसी प्रभावशाली व्यक्ति से अपने स्व-अनुशासन की आदतों में सुधार करने के लिए प्रेरणा की जरुरत होती है।

अनुशासन के बिना जीवन निष्क्रिय और बेकार हो जाता है क्योंकि योजना के अनुसार कुछ भी नहीं होता है। अगर हमें किसी भी कार्य को पूरा करने के बारे में सही तरीके से अपनी रणनीति को लागू करना है तो हमें पहले अनुशासन में रहने की आवश्यकता है। अनुशासन चीजों को आसान बनाता है और हमारे जीवन में सफलता लाता है।

अनुशासन हमें बहुत सारे शानदार अवसर देता है जैसा आगे बढ़ने का सही तरीका, जीवन में नई चीजें सीखने, कम समय के भीतर अधिक अनुभव करने आदि। जबकि अनुशासन की कमी से बहुत भ्रम और विकार पैदा होते है। अनुशासनहीनता के कारण जीवन में कोई शांति और प्रगति नहीं होती है अपितु इसके स्थान पर बहुत सारी समस्याएँ पैदा हो जाती है।

हमें नियमों का पालन करने, आदेशों का पालन करने और व्यवस्थित तरीके से व्यवहार करने की आवश्यकता है। हमें अपने दैनिक जीवन में अनुशासन को महत्व देना चाहिए। वे लोग जो अपने जीवन में अनुशासित नहीं हैं, उन्हें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और उन्हें जीवन में अधिकतर निराशा ही मिलती है।

अनुशासन का महत्व समझने के बाद हमें चाहिए कि हम हमेशा अनुशासन में रहें और अपने जीवन में सफल होने के लिए अपने माता-पिता और शिक्षकों के आदेश का पालन करें। अपने कार्यक्षेत्र पर भी हमें कोशिश करनी चाहिए कि अपने बड़ों की आज्ञा का पालन कर सकें। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और सही तरीके से सब कुछ सीखना चाहिए और सही तरीके से सब कुछ सीखना चाहिए।

काजल
लेखापरीक्षक
लेखापरीक्षा -II

मेरा गाँव अब उदास रहता है

मेरा गाँव बदल रहा है, सच में अब गाँव उदास रहता है।

सब मिलजुल कर रहते थे, अब एक-दूसरे को निगल रहे हैं।।

मिट्टी के मकान कच्चे थे, पर रिश्ते पक्के थे गाँव में।

बच्चे-बूढ़े, मजदूर, किसान सब खुश थे पीपल की छाँव में।।

आज छाँव छितर गई है, रिश्तों की डोर बिखर गई है।

काकी, मामी, मौसी, बुआ, दादी-नानी सब बिछड़ गई है।।

नानी, दादी की बनाई खुरचन, दही, माखन का स्वाद बिसर गया है।

दादी का दुलार, मामा का प्यार, माँ की लोरी सब बिसर गया है।।

गर्मी की छुट्टियों का मजा, अमिया, इमली, जामुन, गिल्ली-डंडा सब भूल गया।

समरकोर्स, प्रोजेक्ट, ट्यूशन, इंटर्नशिप, करियर की टेंशन माइंड में झूल गया।।

रिश्तेदारी की शादी-ब्याह, बरहों, मुंडन, छेदन, अन्नप्राशन सब छूट गया।

पार्टी, थियेटर, क्लब- होटल, बैंकट हाल, प्री-वेडिंग शूटिंग में बदल गया।।

गाँवों में अपनों की चिट्ठी-पत्री, बैरंग, मनीऑर्डर को कोई न जाने अब।

फेसबुक, वाट्सअप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, डिजिटल पे से जुड़े हैं सब।।

भाईचारा, सांझा चूल्हा, बारात और जनवासा, पंगत, मंडप, मोहल्ला सब छूट गया।

प्रपंच राजनीति, ईर्ष्या, भेदभाव, ऊँच-नीच, असहिष्णुता कुछ ज्यादा ही आ गया।।

बड़े-बूढ़े भी अब बच्चों के मोह से दूर हो रहे हैं।

बच्चे भी मोबाइल, लैपटॉप और टैब में डूब रहे हैं।।

अब एहसास हो रहा है कि मेरा गाँव बदल रहा है।

सच में मेरा गाँव उदास रहता है।।

बचपन के साथी लड़के जितने भी थे मेरे गाँव में।

जो बैठते थे दोपहर को नीम की छांव में।।

बड़ी रौनक हुआ करती थी जिनसे घर में वो सब के सब चले गए शहर में।

ऐसा नहीं कि रहने को मकान नहीं था, बस यहाँ रोटी का इंतजाम नहीं था।।

हास-परिहास, हँसी-ठिठोली का उपवास रहता है।

अपने ही घर में माँ-बाप का वनवास रहता है।।

बाबू जी ठंड में सिकुड़ते और गर्मी में पसीने से नहाए थे।

तब जाकर दालान और तीन कमरे किसी तरह बनवाए थे।।

अब कमरे और दालान खाली हैं, आँगन बेजान है।

छतें सूनी और घर खाली हैं, कच्ची गलियाँ वीरान हैं।।

मां का शरीर भी अब कमर दर्द और घुटनों पर भारी है।

पिता को भी अब बी.पी., हार्ट और शुगर की बीमारी है।।

नजर कमजोर हो गई, बहरेपन से माता-पिता परेशान रहते।

बीमारी और परदेशी बच्चों की दूरियों से हैरान-परेशान रहते।।

सच में मेरा गाँव अब उदास रहता है।

छत से बतियाते पंखे, दीवारों में लगे जाले हैं।

कुछ मकानों पर तो कई सालों से लगे तालें हैं।।

बेटियों को ब्याह दिया गया वे ससुराल चली गईं।

दीवाली की फुलझड़ी और होली का गुलाल चली गई।।

बेटियों के मायके का सावन छूट गया।

बेटों के परदेशी होने से घर छूट गया।।

मोहल्ले में जाओ, जरा झाँको कपाट पर।

मिलेंगे अकेले बाबू जी, किसी कुर्सी व खाट पर।।

सावन के झूले उतर गए भादों भी निराश रहता है।

सच में मेरा गाँव अब उदास रहता है।।

कबड्डी, वॉलीबाल, कुश्ती का मैदान सब वक्त की तह में दब गए।

हमारे गाँव के लड़के कमाने दिल्ली, सूरत, बंबई, पंजाब चले गए।।

अब रामलीला, दुर्गापूजा के मेले की वो बात नहीं रही।

गर्मियों में छतों पर हलचल की वो रात नहीं रही।।

चबूतरे व दालान में बैठे सारे बुजुर्ग भी स्वर्ग सिधार गए।

मुश्किलों से जो बचे थे, वे गरीबी और बीमारी से हार गए।।

ये अंधी दौड़ तरक्कियों और नौकरियों की गाँव सूना कर गई।

घर और मन के खालीपन का घाव अब तो दोगुना कर गई।।

शहरों का फ्लैट कल्चर पिंजरें जैसा कबूतरखाना बन गया।

गाँव का आँगन, दालान, तुलसी चौरा सब बिखर गया।।

यारी दोस्ती, हँसी-ठिठोली मिलना-जुलना सब छूट गए।

डुपलेक्स, सेंसेक्स, सक्सेस की उलझन में सब उलझ गए।।

मेरा गाँव अब बदल रहा है सच में मेरा गाँव अब उदास रहता है।

देव प्रकाश गुप्त
हिंदी अधिकारी
लेखापरीक्षा -I

वन स्माइल प्लीज

सुबह 6:30 का समय था। आदविक अपने घर के थोड़ी दूर पर एक पार्क में जाकर एक बैंच पर बैठा करता था और उदास नज़रों से विचरने वाले लोगों को देखा करता था। कोई व्यायाम करने में व्यस्त रहते, कोई दौड़ लगाता दिखता, महिलाएँ गपशप करती दिखती, बुजुर्ग मिलकर अपने फेफड़ों को नई स्फूर्ति प्रदान करने में लगे रहते।

आदविक को सभी सुखी दिख रहे थे उसे ही शायद प्रसन्न रहने का हक नहीं था। उसके बचपन में ही पिता कर्तव्यों से मुक्त हो चुके थे। युवा माँ ने बड़ी मुश्किल से तीनों बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया। दोनों बहनें पाँचवीं कक्षा के बाद पढ़ न सकी और दुकानों में साड़ियाँ बेचने का काम करने थी। आदविक ने जैसे तैसे, स्नातक की पढ़ाई पूर्ण की और तभी साथ में बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर घर के खर्च में हाथ भी बंटवाता था।

स्नातक की परीक्षा पूर्ण कर अब वह नौकरी ढूंढने निकल पड़ा। बात 1988 की है जब 10 वीं करने पर ही नौकरी मिल जाया करती थी । पर भाग्य का खेल ऐसा रहा कि स्नातक होने के बाद भी उसे कोई नौकरी नहीं मिली थी। अगर मिली तो कम वेतन पर चौकीदारी, चपरासी की नौकरी मिलती या फिर उसे यह कहकर मना कर देते कि उसकी शिक्षा की तुलना में वेतन नहीं दे पाएंगें। उन दिनों भारत की अर्थव्यवस्था इतनी अच्छी नहीं थी कि 3 अंकों के ऊपर वेतन निर्धारण कर सकें। यह दुख उसे खाये जा रहा था कि अपने परिवार का ढंग से कैसे निर्वाह करे, कैसे बहनों को पढ़ाए, कैसे अपनी माँ को दूसरों के घरों में काम करने से बचाए। बहनों की शादी तो बहुत दूर की बात थी। उसने सोचा मैं बेकार हूँ किसी काम का नहीं हूँ यह सोचता हुआ वह धूप चढ़ने तक भूखा-प्यासा पार्क में उसी जगह बैठा था। उसने देखा एक लड़की उसे देखकर मुस्कुरा कर आगे निकल गई। उसके दिमाग ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया पर हृदय हल्का सा विचलित हुआ,'वह मुझे जानती नहीं फिर क्यों...'। अगले दिन से आदविक उस लड़की का इंतजार करने लगा। लड़की हौले से मुस्कुराती हुए निकल गई।

उस मुस्कुराहट के आदविक के मस्तिष्क में एक सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होने लगी। अगले दिन उस लड़की के निकलने के बाद

आदविक ने उसका पीछा किया। कुछ दूर जाकर वह एकदम ठिठक गया, मन आत्मग्लानि से भर गया, आँखें डब डबा आईं। सामने का नजारा अत्यधिक भयावह था। लड़की की माँ रोये जा रही थी। लड़की का दाहिना हाथ व पैर दोनों कृत्रिम थे।

"माँ बस भी करो अब कब तक आँसू बहाओगी मैं ठीक हूँ मैं चल तो पा रही हूँ ना भले ही ये मेरा असली पैर नहीं हैं। हाँ थोड़ा दर्द हो रहा है जल्दी ही मुझे इनकी आदत पड़ जाएगी"।

अपनी माँ को तसल्ली देते हुए भी वह मुस्कुरा रही थी। आदविक को इतनी बेचैनी महसूस हुई कि वह यह सब देखकर सोचने लगा कि मेरे हाथ पैर तो बिलकुल ठीक है फिर भी मैं उदास होकर बैठा रहता हूँ। धिक्कार है मुझे, उस अनजान लड़की की मुस्कुराहट के पीछे इतनी वेदना है इसका अंदाजा नहीं था। यह घटना आदविक के लिए प्रेरणा स्रोत बन गई। घर वापस आया तो वह बदल चुका था। उसने ओपन शिक्षा के माध्यम से और अधिक शिक्षा प्राप्त करने की ठानी और राज्य की सिविल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। उस मुस्कुराहट की ऊर्जा इतनी गहरी थी कि उसने व्यक्ति की निराशा को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया।

इस कहानी के माध्यम से मैं यह कहना चाहती हूँ कि सभी को मुस्कुराहट का गहना जरूर धारण करना चाहिए। परन्तु प्रायः यह देखा जाता है कि अधिकतर लोगों की भौंहें तनी रहती है, चेहरे की सारी कोशिकाएँ स्थिर एवं कड़क रहती है। क्या होगा जब आप अपने कार्यस्थल में न जानते हुए भी एक हल्की सी मुस्कान के साथ बगल से गुजर जाएं। आपका क्या अहम कम हो जाएगा। जिस मोहल्ले में आप रहते है उन्हें देखे तो मुस्कुराकर देखे। जीवन का भरोसा अभी नहीं है यह किसी को पता नहीं कि अगले ही पल क्या होने वाला है। क्या पता आपकी मुस्कान एक सार्थक ऊर्जा बनकर आपके आने वाले बुरे समय में दुआ बनकर आपके आने वाले बुरे समय में दुआ बनकर बचा ले।

आज के युग में लोग बहुत व्यावहारिक हो गए हैं। पर जब मुसीबत आती है तो हाथ जुड़ ही जाते हैं, तब लोग कहते है आप सब की दुआओं ने बचा लिया। एक मुस्कुराहट एक दुआ, सौ मुस्कुराहट 100 दुआएँ, सौदा बहुत अच्छा है। प्यारे अपनाएं और स्वस्थ रहे खुश रहें । चलिए कोशिश तो कीजिए मुस्कुराना कठिन नहीं है। यह आपकी स्वयं को वेदना को भी कम करेगी। सबसे अधिक फायदा, युवा बने रहने का सर्वोत्तम स्रोत।

वन स्माइल प्लीज

रेजीना जॉर्ज
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (कें)

जंग में उमंग जिंदगी

पता नहीं सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करूँ कौन से प्रदेश में॥

सात साल तैयारी की और हर भरती फंस जाती है कोर्ट केस में।

"पैसा फर्क डाल रहा था हर रिश्तों में।

नौकरी ना मिलने की वजह से मकान का किराया मैं भरता रहा किस्तों में ।।

पड़ोसियों ने मेरे माँ-बाप से कहा ना हुनर है और ना होनहार है वो।

इतना बेइज्ज़त किया पड़ोसियों ने कि आज मेरी कामयाबी के जिम्मेदार है वो ।।

जो भी इज्जत के डर से डर जाए वो ना करे सरकारी नौकरी की तैयारी, अपने घर जाए।

उनके माथे पर कोई शिकन नहीं होती है जिन्हें कुछ करके दिखाने की लगन होती है।

वक्त ऐसा था कि मुश्किलें मुझे मिटाने पर तुली थी और दुआएँ मुझे बचाने पर तुली थी।

दिल लगा था गुम छुपाने में, आँखें थी कि सब बताने पर तुली थी।।

फिर भी हारा नहीं हूँ ऐ जिंदगी खंडित हूँ।

अपने इरादों में अटल हूँ क्योंकि पंडित है।

हल्का हुआ सब बोझ बस्ते का तो जिंदगी भारी हो गई।

मैं जीता जंग जिंदगी से, इसलिए सरकारी नौकरी आज हमारी हो गई ।।

आर संदीप सिंह

पति अर्चना प्रजापति

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा -II

वृक्षारोपण- एक कार्य महान

वृक्षारोपण से कभी भी, मत कोई घबराओ ।

दम नहीं तो एक ही सही, पर वृक्ष जरूर लगाओ ॥

ये जीवनदाता है, सबको देता स्वस्थ हवा ये ।

स्वस्थ अगर हो तुमको जीना, मत इसे कटवाओ ॥

ये करता है मृदा सुरक्षा, हरियाली है फैलाता ।

करता है ये हरा- भरा जग को, कभी मत इसे छटवाओ ॥

सी ओ 2 जैसे जहर को पीकर, प्राणवायु है फैलाता ।

जो वजूद इसका न होता, तो जीवन कोई न पाता ॥

ये देता खुशियाँ ही सबको, खुशियाली है फैलाता ।

फूल खिलाकर रंग-बिरंगे, दुनिया को है महकाता ॥

वृक्षों की सेवा है पूजा, मन में भाव जगाओ ।

वृक्षारोपण से कभी भी, मत कोई घबराओ ॥

ले शपथ "अपर्णा" के संग, यही है हमारी पूजा ।

सबसे पहले वृक्षारोपण, तब फिर काम हो दूजा ॥

अपर्णा कुमारी
बहन अमरेन्द्र चौधरी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा -II

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाडा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यालय के कार्मिक आनंद लेते हुए

कार्यालयाध्यक्ष मुख्य अतिथि महोदय का सम्मान करते हुए

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह पर ईशवंदना प्रस्तुत करते हुए

कार्यालयाध्यक्ष- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) द्वारा संबोधन

हिंदी पखवाड़े के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यालयाध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के साथ तीनों कार्यालयों के राजभाषा अधिकारी एवं कर्मचारी

हिंदी पखवाडा 2023 के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

1. कविता पाठ:

प्रथम: मयंक कुमार 'मयंक', ले.प. (लेखापरीक्षा- *I*)

द्वितीय: चाँदनी भारती, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

तृतीय: अनूप कुमार, ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

2. अनुवाद:

हिंदी भाषी

प्रथम: मयंक कुमार 'मयंक', ले.प. (लेखापरीक्षा- *I*)

द्वितीय: अनूप कुमार, ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

तृतीय: रवि प्रकाश, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

हिंदीतर भाषी

प्रथम: प्रसाद पी जोशी, सहायक पर्यवेक्षक (प्र.नि.ले.प.कें.)

द्वितीय: मोहन राव.सी.ए., स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

तृतीय: शिव शंकर मुखोपाध्याय, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

3. श्रुतलेखन:

हिंदी भाषी

प्रथम: अनूप कुमार, ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

द्वितीय: विवेक कुमार सिंह, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- *I*)

तृतीय: आरती प्रियदर्शिनी, व.ले.प. (प्र.नि.ले.प.कें.)

हिंदीतर भाषी

प्रथम: शिव प्रिया एस, ले.प. (प्र.नि.ले.प.कें.)

द्वितीय: कृष्णेंदु, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

तृतीय: उमा आर, सहायक पर्यवेक्षक (लेखापरीक्षा- //)

4. निबंध लेखन

हिंदी भाषी

प्रथम: आरती प्रियदर्शिनी, व.ले.प. (प्र.नि.ले.प.कें.)

द्वितीय: महेंद्र सिंह, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- /)

तृतीय: अनूप कुमार, ले.प. (लेखापरीक्षा- //)

हिंदीतर भाषी

प्रथम: सी ए मोहन राव, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

द्वितीय: तेजस एस कुलकर्णी, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- /)

तृतीय: प्रसाद पी जोशी, सहायक पर्यवेक्षक (प्र.नि.ले.प.कें.)

5. लिखित प्रश्नोत्तरी

हिंदी भाषी

प्रथम: अनूप कुमार, ले.प. (लेखापरीक्षा-//)

द्वितीय: विवेक कुमार सिंह, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा-/)

तृतीय: मयंक कुमार 'मयंक', ले.प. (लेखापरीक्षा-/)

हिंदीतर भाषी

प्रथम: मोहन राव सी.एस, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

द्वितीय: सुनील कुमार टी, व.ले.प. (लेखापरीक्षा-*II*)

तृतीय: तेजस कुलकर्णी, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा-*I*)

6. अंताक्षरी

प्रथम: *i*) विजय कुमार, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- *II*)

ii) आशीष द्विवेदी, ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

iii) यशवंत सिंह, ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

iv) नीरज कुमार यादव, डी.ई.ओ. (लेखापरीक्षा- *II*)

द्वितीय: *i*) प्रियंका करमाकर, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- *I*)

ii) सुनील कुमार टी, व.ले.प. (लेखापरीक्षा- *II*)

iii) आरती प्रियदर्शिनी, व.ले.प. (प्र.नि.ले.प.कें.)

iv) साधना सिंह, व.ले.प. (लेखापरीक्षा- *I*)

तृतीय: *i*) शोभा जी वारियर, व.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)

ii) अरविंद कुमार, स.ले.प.अ. (आर.टी.सी)

iii) दामिनी सिंह, स.ले.प.अ. (लेखापरीक्षा- *I*)

iv) ए.वी. कृष्णा, कल्याण सहायक (लेखापरीक्षा- *I*)

7. आशुभाषण:

प्रथम: **रेजीना जॉर्ज, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)**

द्वितीय: **रवि प्रकाश, स.ले.प.अ. (प्र.नि.ले.प.कें.)**

तृतीय: **प्रीति, ले.प. (प्र.नि.ले.प.कें.)**

सेवानिवृत्ति (अप्रैल *2023* से मार्च *2024* तक)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति		
1.	अनंत के पवार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	*30*	*4*	*2023*
2.	नरेशन के	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*5*	*2023*
3.	यशवंत राव एम जी	पर्यवेक्षक	*31*	*5*	*2023*
4.	रामचंद्रन आर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*5*	*2023*
5.	कृष्णराज एल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*5*	*2023*
6.	नागराज के एन	आशुलिपिक	*31*	*5*	*2023*
7.	नारायण राव एच	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*5*	*2023*
8.	श्रीनिवास मूर्ति वाई आर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*31*	*5*	*2023*
9.	मुकुंद एम जी	सहायक पर्यवेक्षक	*30*	*6*	*2023*
10.	कन्नी वधन पिल्लई	पर्यवेक्षक	*30*	*6*	*2023*
11.	श्रीनिवास टी वी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*30*	*6*	*2023*
12.	रामकोटी एस एस	कल्याण अधिकारी	*31*	*7*	*2023*
13.	वसंती जी आर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*31*	*7*	*2023*
14.	शंकर जी	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*7*	*2023*
15.	सुजाता मूर्ति	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*31*	*7*	*2023*
16.	पीटर जॉर्ज एफ	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*7*	*2023*

17.	बाल रवि पी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*8*	*2023*
18.	के जे पॉल (प्रतिनियुक्ति पर, मूल कार्यालय- ए एंड ई रायपुर)	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*31*	*8*	*2023*
19.	सुधींद्र के एम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*30*	*9*	*2023*
20.	थिरुनावुकारसु एम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*30*	*9*	*2023*
21.	मृणालिनी देवी एस	पर्यवेक्षक	*30*	*9*	*2023*
22.	पुट्टाराजू के	पर्यवेक्षक	*30*	*9*	*2023*
23.	भारती ए एस	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*10*	*2023*
24.	विजय लक्ष्मी डी	पर्यवेक्षक	*30*	*11*	*2023*
25.	विजयानंद	सहायक पर्यवेक्षक	*30*	*11*	*2023*
26.	रविकुमार एस	बहु कार्य कर्मचारी	*31*	*1*	*2024*
27.	सुरेश कुमार बी पी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*29*	*2*	*2024*
28.	परशिवा	सहायक पर्यवेक्षक	*29*	*2*	*2024*
29.	इरुदय मेरी जयंती	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*3*	*2024*
30.	लक्कम्मा.वी. उर्फ रथनम्मा	बहु कार्य कर्मचारी	*31*	*3*	*2024*
31.	सुरेश कुमार वी आर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*31*	*3*	*2024*
32.	रवि बाबू एन	पर्यवेक्षक	*31*	*3*	*2024*
33.	लियोनारा जे फर्नांडीस	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*3*	*2024*

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (अप्रैल *2023* से मार्च *2024* तक)

क्र.सं.	**नाम**	**पदनाम**	**सेवानिवृत्ति**		
1.	बी एस आशा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*5*	*4*	*2023*
2.	नमिता शेट्टी	सहायक पर्यवेक्षक	*14*	*7*	*2023*
3.	बिंदु सुधीर	सहायक पर्यवेक्षक	*31*	*7*	*2023*
4.	वनजाक्षी के	सहायक पर्यवेक्षक	*16*	*8*	*2023*
5.	कृष्णा के वी	सहायक पर्यवेक्षक	30	9	2023
5.	रमेश कुमार पी	सहायक पर्यवेक्षक	*16*	*10*	*2023*
6.	बेलियप्पा बी एम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	*29*	*2*	*2024*

विधि के विधान के आगे किसी की क्या चलती है। बड़े दुःख के साथ यह सूचित किया जाता है कि हमारे कुछ साथी असमय काल के गाल में चले गए, उनकी आत्मा की शांति के लिए हम प्रार्थना करते हैं:

दिवंगत तिथि (अप्रैल *2023* से मार्च *2024* तक)

क्र.सं.	**नाम**	**पदनाम**	**सेवानिवृत्ति**		
1.	चंद्रशेखर बी लट्ठे	सहायक पर्यवेक्षक	*25*	*4*	*2023*
2.	होयसला के	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	*22*	*2*	*2024*